जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

जालोर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

जालोर, मंगलवार 20 मई, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

राष्ट्राय स्वाहा,
इदं राष्ट्राय, इदं न मम

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

ऑपरेशन सिंदूर की गूंज के साथ भारत की शौर्य गाथा में एक नया अध्याय जुड़ा है

आपका संकल्प- हमारा विश्वास

वीर धरा राजस्थान माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी का अभिनंदन करती है

प्रदेशवासियों को 26 हजार करोड़ रुपए के विकास कार्यों तथा
देश को अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 103 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों की सौगात

मुख्य अतिथि

श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री

22 मई, 2025 | प्रात: 10:30 बजे | स्थान - पलाना, बीकानेर

आप सादर आमंत्रित है

विकास पथ पर राजस्थान

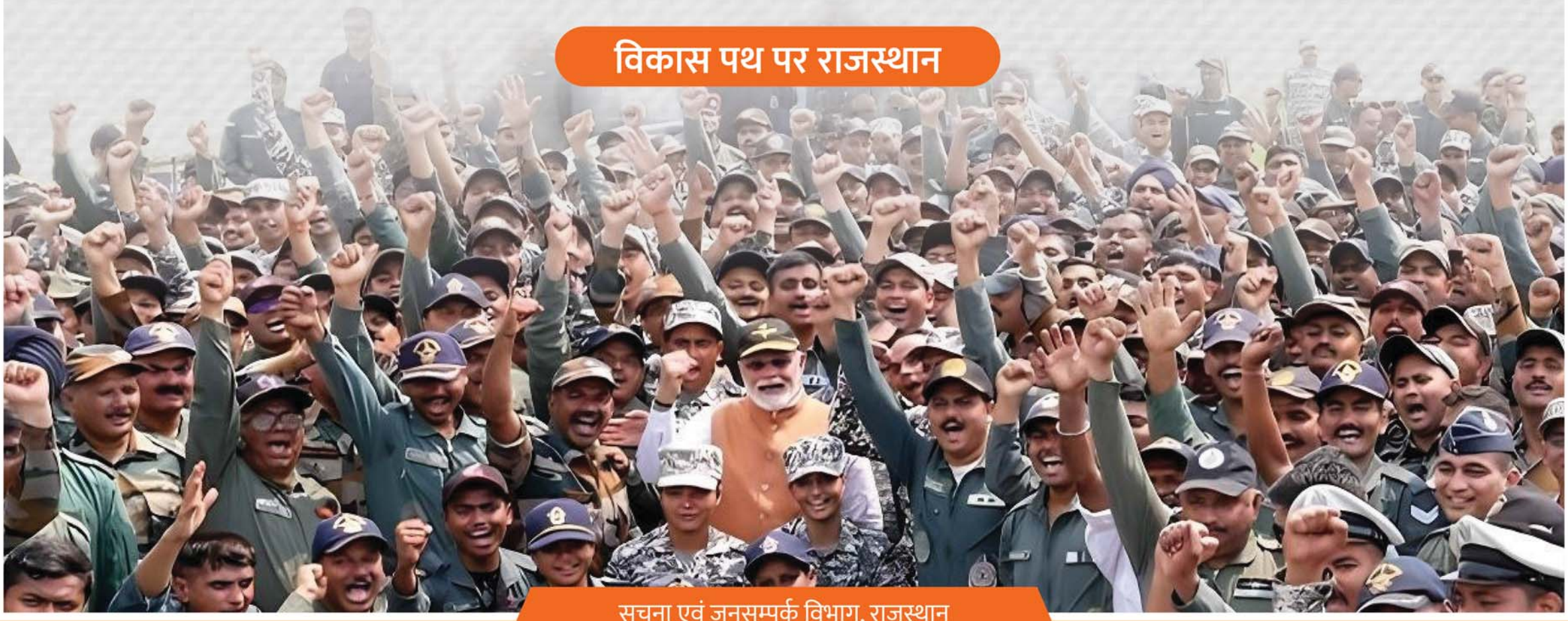

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

विचार बिन्दु

कोई इन्सान दो आदमियों की एक साथ खिदमत नहीं कर सकता; चाहे प्रभु की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। –बाइबिल

क्या अमेरिका को भी आँख दिखानी पड़ेगी?

जब से डोनाल्ड ट्रंप ने दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति का पद संभाला है, वे अपने निर्णय, वक्तव्य एवं व्यवहार से भारत को अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड रहे हैं ।

इसकी शुरुआत राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण समारोह से ही हो गई थी, जब शपथ ग्रहण समारोह में चीन के राष्ट्रपति सहित अनेक राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया गया, किंतु भारत के प्रधानमंत्री को निमंत्रण नहीं दिया गया । अमेरिका में भारत के दूतावास द्वारा जैसे-तैसे भारतीय विदेश मंत्री के लिए निमंत्रण की व्यवस्था की गई और उन्होंने शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया। यह विचित्र इसलिए लगा कि ट्रंप के पहले कार्यकाल में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप की नजदीकियां और दोस्ती कई बार देखी गई । उसका कई बार जिक्र भी भारतीय प्रधानमंत्री ने किया। जिस समय ट्रंप अहमदाबाद आए थे तो बहुत बडे समारोह में दोनों ने पूरे स्टेडियम में हाथ में हाथ डालकर पैदल चक्कर लगाया था। इसी प्रकार जब अमेरिका में 'हाऊ डी मोदी' कार्यक्रम किया गया तो वहां भी बडी संख्या में अमेरिकी भारतीयों के सामने उन्होंने अपनी दोस्ती का प्रदर्शन किया।

राष्ट्रपति पद संभालते ही ट्रंप ने अवैध तौर पर अमेरिका में रह रहे भारतीयों को तत्काल भारत भेजने के निर्देश दिए। इसकी पालना में 100 से अधिक भारतीयों को पांवों में बेड़ियां डालकर अमेरिकी सेना के विमान से भारत भेजा गया । यह दृश्य भारतीयों के लिए बड़ा अपमानजनक था। इसके विरोध में कोई प्रतिक्रिया या टिप्पणी भारत सरकार द्वारा नहीं की गई। शायद इसी का परिणाम था कि बाद में भी भारतीयों को इसी प्रकार से भेजा जाता रहा।

अमेरिका में रह रहे कई भारतीयों के वीज़ा केवल ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर ही निरस्त करने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई। इससे वहां पढाई कर रहे छात्रों और वहां पर कई वर्षों से नौकरी कर रहे भारतीयों पर अनिश्चितता के बादल मंडराने लगे। यह कदम भारतीयों के हित के विपरीत था इस बारे में भारत सरकार ने कोई प्रतिकार नहीं किया।

1 अप्रैल 2025 से डोनाल्ड ट्रंप ने अचानक 'टैरिफ' अर्थात अमेरिका में आयात होने वाली वस्तुओं पर आयात शुल्क बहुत बढ़ा दिया। इसके कारण भारत से अमेरिका में होने वाले निर्यात पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ने की आशंका उत्पन्न हुई । उल्लेखनीय है कि भारत अमेरिका से जितना आयात करता है उससे कहीं अधिक अमेरिका को निर्यात करता है। जैसे ही अमेरिका ने टैरिफ बढ़ाया तो भारतीय वस्तुएं अमेरिका में महंगी होने लगीं, जिससे उनके निर्यात पर प्रभाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में इन वस्तुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना बनी। राष्ट्रपति का यह निर्णय भारत के उद्यमियों के हित के विपरीत था किंतु इस बारे में भारतीय विदेश मंत्रालय अथवा प्रधानमंत्री ने कोई विरोध सार्वजनिक रूप से दर्ज नहीं कराया ।

राष्ट्रपति ट्रंप के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार की हद तो तब हो गई जब उन्होंने 10 मई, 2025 को भारतीय समयानुसार लगभग 5:30 बजे अचानक एक ट्वीट करके दुनिया को सूचित किया कि उनकी मध्यस्थता के कारण भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष पर विराम लग गया है। उनका यह कथन एकदम अनुचित था क्योंकि भारत, 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से, पहलगाम के बर्बर आतंकी हमले में लिप्त पाकिस्तानियों के आतंकी ठिकानों पर लगातार हमले करके उन्हें ध्वस्त कर रहा था। भारतीय सेना ने बड़ी बहादुरी से बिना नागरिकों को नुकसान पहुंचाए उनके आतंकी ठिकानों पर बड़ा कठोर प्रहार किया था। राष्ट्रपति ट्रंप की छवि अचानक अजीबोगरीब बयान देने की रही है, किंतु इस बार उन्होंने अपने द्वारा कराए गए संघर्ष विराम की बात लगभग 5-6 बार विभिन्न माध्यमों से दोहराई। अत: यह नहीं कहा जा सकता कि आकस्मिक रूप से उन्होंने यह बात कह दी होगी। उनका यह वक्तव्य भारत के इस स्टैंड पर एक प्रकार से हमला था कि वह भारत और पाकिस्तान के बीच किसी तीसरे की कोई मध्यस्थता स्वीकार नहीं करेगा। ट्रंप ने तो यहां तक कह दिया कि किसी न्यूट्रल स्थान पर भारत और पाकिस्तान की वार्ता कराई जाएगी। ट्रंप के इस ट्वीट के द्वारा दिए गए बयान पर भारतीय प्रधानमंत्री ने कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की और न ही विदेश मंत्रालय ने इसका खंडन किया।

भारत और पाकिस्तान को एक ही तराजू में रखने की राष्ट्रपति ट्रंप की इस कोशिश को भारत द्वारा नकारा जाना चाहिए था, क्योंकि भारत आतंक का शिकार था और पाकिस्तान, आतंकी गतिविधियां अपने देश में पनपाने का आरोपी था। भारत में जहां 'जनरल इलेक्शन' होते हैं, वहीं पाकिस्तान में जनरल की इच्छा अनुसार इलेक्शन होते हैं। पाकिस्तान जहां इस्लामी गणराज्य है वहीं भारत एक लोकतांत्रिक, पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है। इस कारण भारत की अपनी एक विशिष्ट पहचान 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' के रूप में, प्रधानमंत्री मोदी ने बनाने कोशिश की है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारत और पाकिस्तान को समान रूप से महान बताने का बयान कैसे और क्यों दिया गया एवं भारत सरकार द्वारा इस पर आपत्ति दर्ज नहीं कराना समझ से परे है।

कहा जाता है कि जब बाइडन अमेरिका के राष्ट्रपति थे तो डोनाल्ड ट्रंप ने बयान दिया था कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका यात्रा के समय उनसे मिलने आएंगे । जब प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका गए तो वे ट्रंप से मिलने नहीं गए। इसे संभवतया ट्रंप ने अपना अपमान माना और कहीं उसके बदले के रूप में तो उनके द्वारा इस प्रकार का दृष्टिकोण नहीं अपनाया जा रहा है?

भाजपा की सांसद फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत ने अपने ट्वीट में जहां ट्रंप को 'अल्फा मेल' कहा, वहीं मोदी को सभी 'अल्फा मेल्स' का बाप बताया। पाठकों को यह बता दें कि 'अल्फा मेल' का तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो किसी समूह में सबसे अधिक मजबूत, प्रभावशाली और हावी होता है। उन्होंने मोदी को ट्रंप से बहुत बड़ा नेता सिद्ध करने की दृष्टि से यह भी लिखा कि ट्रंप दूसरी बार राष्ट्रपति बने हैं, जबकि प्रधानमंत्री मोदी तीसरी बार बने हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि भाजपा सांसद का यह बयान, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को ट्रंप के मुकाबले में बहुत बड़े स्तर का नेता बताया, उसे डिलीट करने हेतु, भाजपा के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने टेलीफोन पर निर्देश दिए । भारत की ऐसी क्या मजबूरी है कि जब भाजपा का ही कोई सांसद अपने प्रधानमंत्री की प्रशंसा करे तो उसे भी ऐसा करने से रोका जाए?

अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा विस्तार से बताया गया कि कैसे उनके विदेश सचिव मार्क रॉबियो ने दोनों देशों से लगातार बात करके भारत और पाकिस्तान के बीच समझौता कराने की बात कही।

उल्लेखनीय है कि भारत ने 7 से 9 मई , 2025 के बीच तीन दिनों में ही पहलगाम के आतंकी हमले का बदला लेते हुए पाकिस्तान में स्थित अनेक महत्वपूर्ण आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया था । यदि संघर्ष और चलता, तो उसका नुकसान पाकिस्तान को ही उठाना पड़ता। अत: यदि संघर्ष रोकने की कोई मजबूरी थी, तो वह पाकिस्तान की हो सकती है, भारत की नहीं। भारत के प्रधानमंत्री या विदेश मंत्रालय ने इसका प्रतिकार करते हुए किसी प्रकार का कोई सार्वजनिक वक्तव्य जारी नहीं किया।

राष्ट्रपति ट्रंप ने तो यहां तक भी कहा कि उन्होंने दोनों देशों को इस बात की चेतावनी देकर कि उनके साथ व्यापार बंद कर दिया जाएगा, उन्हें संघर्ष रोकने के लिए मजबूर किया ।

क्या भारत ने अपने स्वाभिमान को ताक में रखकर, व्यापार की खातिर, पाकिस्तान के साथ संघर्ष विराम की बात मानी? इस वक्तव्य का भी कोई खंडन अभी तक प्रधानमंत्री या भारत सरकार ने नहीं किया है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने तो यहां तक कह दिया कि भारत और पाकिस्तान के बीच 1500 वर्ष से विवाद चल रहा है। जिस व्यक्ति को यही पता नहीं हो कि पाकिस्तान का निर्माण ही 1947 में हुआ है, फिर भी उसकी बात का खंडन तक न करना, भारत की प्रतिष्ठा पर विपरीत प्रभाव डालता है।

एक और आश्चर्यजनक बयान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यह दिया कि उन्होंने एप्पल कंपनी के मालिक टिम कुक को बुलाकर यह कह दिया है कि वे भारत में एप्पल फोन के निर्माण का कार्य बंद करके उसे अमेरिका में शिफ्ट करें। भारत में निर्मित होकर अमेरिका में बिकने वाले एप्पल फोन की कुल कीमत 1 लाख करोड़ रुपए से भी कहीं अधिक है। एप्पल द्वारा और भी नए संयंत्र भारत में लगाए जाने की तैयारी चल रही थी। हालांकि कुक ने अपनी निवेश योजना में किसी भी प्रकार के परिवर्तन से इनकार किया है, किंतु अमेरिकी राष्ट्रपति का इस प्रकार का बयान ही भारत के हितों के बिल्कुल विपरीत है।

यह स्पष्ट नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति क्यों दूसरे कार्यकाल में लगातार भारत विरोधी कार्य करने और बयान देने में संलग्न हैं एवं भारत सरकार भी उनके बयान का कोई प्रतिकार नहीं करके अपनी मजबूरी ही प्रकट कर रही है। लोगों के लिए यह समझना कठिन है कि भारत के प्रधानमंत्री मोदी की ऐसी क्या मजबूरी है कि वे ट्रंप को उनके गलत बयानों के बारे में स्पष्ट नहीं बता रहे हैं?

कहा जाता है कि जब बाइडन अमेरिका के राष्ट्रपति थे तो डोनाल्ड ट्रंप ने बयान दिया था कि प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका यात्रा के समय उनसे मिलने आएंगे । जब प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका गए तो वे ट्रंप से मिलने नहीं गए। इसे संभवतया ट्रंप ने अपना अपमान माना और कहीं उसके बदले के रूप में तो उनके द्वारा इस प्रकार का दृष्टिकोण नहीं अपनाया जा रहा है?

सरकार ने यह स्वागत योग्य निर्णय लिया है कि वह सात सर्वदलीय प्रतिनिधि मंडल अलग अलग देशों में भेज रहा है जो पाकिस्तान द्वारा आतंककारी गतिविधि को बढ़ावा दिए जाने के बारे में भारत की स्थिति को स्पष्ट करेंगे। एक प्रतिनिधि मंडल शशि थरूर के नेतृत्व में अमेरिका जाएगा,जहां भारत का पक्ष मजबूती के साथ रखा जाएगा । तब संभवतया, अमेरिका के भारत के प्रति दृष्टिकोण में कोई बदलाव आए।

फिलहाल तो भारत सरकार और विशेषकर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा ट्रंप के भारत विरोधी कृत्यों और वक्तव्यों पर विरोध दर्ज न कराना, देश की मजबूरी ही माना जाएगा। इतना मजबूर तो भारत कभी नहीं था।

अब हम इस बात को पाठकों के विवेक पर छोड़ते हैं कि वे स्वयं तय करें कि अमेरिका, विशेषकर ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में भारत के साथ इस प्रकार का अपमानजनक व्यवहार क्यों कर रहे हैं और भारत उसका समुचित प्रति उत्तर देने में क्यों संकोच कर रहा है? संभव है, इन प्रश्नों का उत्तर भविष्य में शीघ्र ही देश के नागरिकों को मिल पाएगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कुत्ते-बिल्लियों की दुश्मनी मिटाने वाले तुर्क का भारत से टकराव क्यों?

कुत्ते-बिल्ली को एक साथ रहना सिखाने वाले देश तुर्क आतंकवाद को पोषित करने वाले देश पाकिस्तान का पक्ष कैसे ले सकता हैं?

मेरी तुर्क की यात्रा के दौरान जब मैं इस्तांबुल में था तब रात बारह बजे नदी के किनारे से ऊपर पहाड़ी के रास्ते होटल जा रहा था तभी बीच में कुत्ते-बिल्लियों का झुंड देखकर डर गया। दो-तीन लोग भी खड़े थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि यहाँ कुत्ते-बिल्लियों को एक साथ रहना सिखाया जाता है। जानवरों के प्रति भी इतना प्रेम देखकर लगा कि यहाँ मनुष्य के लिए बहुत प्रेम होगा और लोगों के व्यवहार से यह महसूस भी होता है। वहाँ आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा कट्टरता के प्रतीकों को हिक़ारत से देखता है। स्वतन्त्रता के सभी हिमायती दिखे।

बिल्लियों से बहुत ज़्यादा प्यार और कुत्तो के साथ सहजीवन सिखाता तुर्क समाज जीव के प्रति संवेदनशीलता का अदभुत उदाहरण है। हम लोग जब इस्तांबुल से अंतयालय जा रहे थे तब भी एक महिला ने बिल्ली के लिए विमान में अलग सीट ली थी। भारत में मैंने देखा कि कुत्ते-बिल्ली के बीच पुरानी दुश्मनी है और कोई एक-दूसरे को देखकर राज़ी नहीं है। देखते ही झगड़ पड़ते है। तुर्क में दोनों को दोस्त बनाने की कितनी बड़ी कोशिश है।

हाँ मैं यह समझ नहीं पाया कि जानवरों के प्रति लगाव की वजह इस्लाम धर्म है या पाश्चात्य सभ्यता। यह पता नहीं लगा सका लेकिन लोगों की संवेदनशीलता का क़ायल हुआ। इस्तांबुल और अन्य सभी पर्यटन स्थलों पर पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला है। रात भर अकेले घूमने पर भी डर नहीं लगा। कहीं भी मुस्लिम देश होने के कारण कोई अनहोनी होने की आशंका की कोई बात नहीं। यहूदियों के एक धार्मिक स्थल पर भी पुलिस का पहरा देखा। पुलिसकर्मी ने बताया कि इस धार्मिक स्थल की सुरक्षा के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं। यहाँ कोई कट्टरपंथी उसे हटाने की बात नहीं कर सकता। इससे यहाँ की सरकार का चरित्र भी धर्म निरपेक्ष सा लगता है लेकिन देश की राजनीति मुस्लिम कट्टरता पर चलती है। इस राजनीति का व्यवहार में असर नहीं दिखता लेकिन अन्तराष्ट्रीय स्तर पर चौधराहट की बात आती हैं तो ऐरदोगन का कट्टर चेहरा सामने आता है।

ग़ुब्बारे की यात्रा कराने के लिये मशहूर कप्पाडोशिया में एक होटल मालिक से दोस्ती से कई बातें सामने आई। उसने बताया कि वह बुर्के से नफ़रत करता है। उसके परिवार की महिलाएँ भी बुर्का पहनकर नहीं जाती। महिलाएँ पुरुषों के साथ सिगरेट भी पीते दिखाई देती है। कहीं से भी यह देश मुस्लिम क़ायदों के साथ चलता नहीं दिखता। सब तरफ़ स्वतन्त्रता के हिमायती लोग हैं। अंत्यालया मानो पर्यटकों के लिए ही बना है। दूर तक मसाज केंद्रों की लाइनें हैं। यहाँ अफ्रीकी औरतें सेवाएँ देती है। एक अफ्रीकी ने बताया कि यहाँ मुस्लिम होने के बावजूद उनका शोषण होता है। तुर्क यूरोप और एशिया में बँटा है। तुर्क का राष्ट्रपति ऐरदोगन कट्टर मुस्लिम की राजनीति करता है लेकिन देश में उदारवादी सोच के लोग भी खूब मिल जायेंगे। हाल ही में उदार भारत के बजाय कट्टर मुस्लिम देश होने के नाते पाकिस्तान के साथ खड़े होने के कारण उस पर भारत ने प्रतिबंध लगाये हैं। कुछ समय बाद यह स्पष्ट हो जाएगा कि देश कुत्ते बिल्लियों में मोहब्बत कराने वाले लोगों के कहे पर चलेगा या उन कट्टर लोगों से चलेगा जो मानवता के बजाय मारपीट-आतंकवाद को जीवन का आधार मानते हैं। एर्दोगन को भी पता चलेगा कि पर्यटकों के लिए बनाए गए सुन्दर स्थलों की चाहत भी तभी है जब सबसे ऊपर मानवता होगी। भारत के लोगों ने तो यह भुला दिया था कि तुर्क ने कभी नालन्दा को उजाड़ दिया था। नई सोच के साथ काफ़ी संख्या में भारतीय तुर्कि में जाने लगे थे वहाँ के लोगों ने भी बांह फैलाकर स्वागत किया लेकिन सरकार के कट्टरवादी रवैये ने सब कुछ बदल दिया।

–सुरेश पारीक,
वरिष्ठ पत्रकार

पर्यटन की दिशा में ऐतिहासिक परिवर्तन

डॉ. कैलाश सोडाणी

पर्यटन उद्योग दुनियाँ भर में आर्थिक विकास एवं रोजगार का महत्वपूर्ण जनक रहा है। भारत के पर्यटन उद्योग ने लगभग 8 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान किया है। विदेशी पर्यटकों से हमारे विदेशी मुद्रा के भंडार को ताकत मिल रही है। वर्ष 2023 में लगभग 60 लाख विदेशी पर्यटक भारत दर्शन हेतु आए हैं वैश्विक पर्यटन में भारत 14वें स्थान पर है। सरकार का लक्ष्य है, रोजगार आधारित विकास के माध्यम से भारत को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन केन्द्र के रूप में खड़ा करना हैं।

भारतीय संस्कृति में देशाटन का महत्वपूर्ण स्थान है धार्मिक पर्यटन तो हजारों वर्षों से हमारी रगों में बसा हुआ है। हमारे देश में धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार जीवन की सार्थकता के लिए हर भारतीय का कम से कम एक बार चार धाम यात्रा पर जाना एक खूबसूरत स्वप्न होता है जिसकी पूर्णता पर परिवार में खुशियों का वातावरण बनता है। चार धाम की यात्रा की सोच के पीछे संपूर्ण भारत दर्शन ही हैं।

मूल विषय यह है कि आजादी के बाद लंबे समय तक देश के नीति निर्माता चार धाम, महाकुंभ, तिरुपति बालाजी, वैष्णोदेवी, महाकालेश्वर, अयोध्या आदि को नजरअंदाज करते हुए ताजमहल, लाल किला, चारमीनार आदि में ही पर्यटन की तलाश कर रहे थे परिणाम कमजोर ही आने थे, क्योंकि हमारी दिशा ही गलत थी।

पर्यटन की दिशा में ऐतिहासिक परिवर्तन

तिरुपति बालाजी, वैष्णो देवी, अयोध्या, उज्जैन में आधारभूत संरचना में सुधार के बाद बिना किसी मार्केटिंग के आज लाखों यात्रियों का तांता लगा हुआ है। अभी हाल ही में प्रयागराज के महाकुंभ में 66 करोड़ लोगों का स्वयंमेव पहुंचना देश के पर्यटन उद्योग में परिवर्तन की एक क्रांतिकारी गूंज है यह एक गौरवशाली शुभारंभ है। विश्व में किसी एक पर्यटन केंद्र पर पहुंचने वालों की यह सबसे बड़ी एवं ऐतिहासिक संख्या हैं। आस्था और व्यवस्था का समागम कुंभ पर पाकिस्तानी पत्रकार खालिद उमर ने जिन शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की है, काबिले तारीफ है -

धरती पर मानवता का सबसे बड़ा जमावड़ा। जहां प्रत्येक दर्शनार्थी आनंद एवं परमानंद के सरोवर में आकंठ डूबा हुआ था। इस आयोजन में कोई खून खराबा नहीं, कोई हिंसा नहीं, कोई घटना - दुर्घटना नहीं, कोई राजनीति नहीं, कोई धर्मांतरण नहीं, कोई संप्रदाय नहीं, कोई भेदभाव नहीं, कोई व्यापार-व्यवसाय नहीं, केवल और केवल आस्था, विश्वास और भावनाओं का संगम था, चारों ओर खुशियों का सराबोर था। करोड़ों लोगों के जनसमूह के बावजूद न कोई शिकायत, ना कोई आरोप-प्रत्यारोप।

मानवता एवं ब्रह्मांड के मध्य जो संबंध है उस पर आधारित है कुंभ।

कुंभ मेले का हर अनुष्ठान ग्रहों, नक्षत्रों और ब्रह्मांड की गतिशीलता से जुड़ा हुआ है। आधुनिक विज्ञान से बहुत आगे हिंदू धर्म हमें मानवता एवं ब्रह्मांड के बीच के संबंधों को दर्शाता है। यह सिद्ध करता है कि हिंदू धर्म का ज्ञान अत्यंत श्रेष्ठ एवं पुरातन हैं। हिंदू धर्म केवल प्रकृति के साथ सामंजस्य नहीं रखता है, अपितु हिंदू धर्म तो स्वयं ही प्रकृति हैं।

पर्यटन की दिशा में ऐतिहासिक परिवर्तन

पर्यटन में परिवर्तन की इस गूंज ने हमें यह बतला दिया है कि अब तक देश में पर्यटन की दिशा एवं दर्शन ही गलत था। तत्कालीन सरकारों ने हमारी आस्था एवं भावनाओं के केन्द्रों को भूलकर विदेशी आक्रांताओं द्वारा निर्मित भवनों को पर्यटकों के लिए आदर्श मान बैठे। यह लार्ड मैकाले द्वारा निर्मित सोच का ही नतीजा है जिसमें हम विदेशी भाषा, विदेशी वेशभूषा एवं विदेशी भोजन को हमारी अपनी भाषा, वेशभूषा एवं भोजन से श्रेष्ठ समझ बैठे। इसी कमजोर मानसिकता के कारण 50-60 वर्षों तक देश का पर्यटन गलत रास्तों पर भटकता रहा। दिशा ही गलत होने से पर्यटन उद्योग तेजी से बढ़ नहीं पाया।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण एवं प्रयागराज के महाकुंभ से देश के पर्यटन उद्योग को अब जाकर सही दिशा मिली है। धार्मिक आस्था के पावन स्थलों के साथ-साथ भारत पर प्रकृति की भी भरपूर मेहरबानी है, हिमालय की शीतल कंदराओं से लेकर कल-कल करती नदियां, रेगिस्तानी टीलें, हजारों किलोमीटर तक हमें स्पर्श करती समुद्री लहरों से युक्त भारत पर्यटन की दृष्टि से बहुत धनाढ य हैं।

नि: संदेह अब हमें धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन को सर्वोपरि मानते हुए देश में आधारभूत सुविधाओं में तेजी से सुधार अपेक्षित हैं। गंदगी एवं अतिक्रमण को समाप्त करना होगा। स्वच्छता पर्यटक की पहली आवश्यकता है, इसे समझना होगा। तभी जाकर पर्यटन को मिली सही दिशा का, सही उपयोग सम्भव हो पायेगा।

–डॉ. कैलाश सोडाणी,
कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

भीलवाड़ा के कई गांवों में भीषण गर्मी में पीने के पानी का संकट

भीलवाड़ा, (निसं)। भीषण गर्मी में गांवों में पीने के पानी का संकट बना हुआ है। ग्रामीणों को पीने के पानी की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। पानी की किल्लत ने उनका जीना मुहाल किया हुआ है। ग्रामीण पानी खरीदकर काम चला रहे हैं। घरों में बंधे हुए पशु पानी के लिए तरस रहे हैं। कई बार विभाग के चक्कर लगाने के बाद भी सुनवाई नहीं हो पा रही है।

- **कंकरोलिया माफी गांव की महिलाएं टेक्सी से 11 किमी दूर कोटड़ी उपखंड मुख्यालय पर चम्बल प्लांट पर पहुंची, प्रदर्शन किया**
- **महिलाओं ने अधिकारी को खरी-खोटी सुनाई और कहा कि पानी की कमी से हमारे पशु मर रहे हैं, महीने में चार दिन पानी आता है**

कंकरोलिया माफी गांव की महिलाओं ने पानी की समस्या को लेकर प्रदर्शन किया।

क्षेत्र के सातोला का खेड़ा ग्राम पंचायत क्षेत्र के कंकरोलिया माफी गांव की महिलाओं ने पानी की समस्या को लेकर प्रदर्शन किया। सोमवार को कंकरोलिया माफी गांव की महिलाएं टेक्सी में सवार होकर करीब 11 किलोमीटर दूर कोटड़ी उपखंड मुख्यालय पर चम्बल प्लांट पर पहुंची और प्रदर्शन करते हुए अधिकारी को खरी-खोटी सुनाई। महिलाओं ने कहा कि पानी की कमी से हमारे पशु व जानवर मर रहे हैं, महिलाओं ने कहा कि महीने में चार दिन पानी आता है और वो भी समय पर नहीं आता है और महीने में चार दिन आता वो भी मात्र 10-20 मिनट ही पानी आता है। महिलाओं ने ज्ञापन देकर मांग की है कि चम्बल पाइप लाइन से अवेध कनेक्शन ले रखे हैं, जिन्हें जल्द से जल्द हटाने चाहिए और अगर चम्बल का पानी सुचारु रूप से चालू नहीं हो तो महिलाओं ने तीन दिन का समय दिया और महिलाओं ने कहा कि तीन दिन में पानी का समाधान नहीं हुआ तो कंकरोलिया माफी की महिलाएं धरना प्रदर्शन करेंगी और जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। इस दौरान उमा देवी ओझा, श्यामू देवी सुथार, कमला देवी, गीता देवी जोशी, गुलाब ओझा सहित बड़ी संख्या महिलाएं मौजूद रही।

भीषण गर्मी से जनजीवन प्रभावित

जोधपुर, (कासं)। शहर में पड़ रही भीषण गर्मी से पूरा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। चिलचिलाती धूप के कारण दिन में बाहर निकलना मुश्किल होता जा रहा है। सोमवार को भी सुबह से ही तेज धूप ने बेचैनी बढ़ा दी। सुबह से ही तेज गर्मी थी जिससे लोग परेशान हुए। जोधपुर शहर में दोपहर में तल्ख धूप के चलते शहर के मुख्य बाजार व सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहा। लोग अपने-अपने तरीके से धूप से बचाव के जतन करते दिखे। घर में पंखे-कूलर भी अब गर्म हवा फेंकने लग गए हैं। यहां दिन के साथ रात का तापमान भी बढ़ रहा है। सोमवार को जोधपुर शहर में अधिकतम तापमान 42 और न्यूनतम तापमान 31 डिग्री सेल्शियस दर्ज किया गया।

भीषण गर्मी के बीच नौतपा भी 25 मई से शुरू हो जाएगा, जिसके बाद 25 मई से 9 दिन तक भीषण गर्मी का दौर रहेगा। यानी 25 मई से 2 जून तक पूरे राजस्थान में नौतपा सक्रिय रहेगा और गर्मी का प्रकोप और ज्यादा बढ़ जाएगा। वहीं दिन और रात के तापमान में भी बदलाव की संभावना है। नौतपा खत्म होते ही लोगों को मानसून का बेसब्री से इंतजार रहेगा। ऐसे में मौसम विभाग का कहना है कि मई के आखिर या जून के शुरू में प्री-मानसून की गतिविधियां एक्टिव होने की संभावना है। ऐसे में नौतपा के खत्म होते ही राजस्थान के कई जिलों में प्री-मानसून बारिश की गवितिविधियां शुरू हो जाएगी।

राशिफल मंगलवार 20 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र सायं 7:12 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 2:50 तक, बवकरण प्रात: 5:52 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 7:36 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर योग और राजयोग सूर्योदय से प्रात: 5:22 तक है। आज अष्टमी तिथि का क्षय हुआ है। आज कालाष्टमी, त्रिलोकनाथ अष्टमी है। पंचक प्रात: 7:35 से आरम्भ होगा। आज सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश रात्रि 12:25 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:02 से 10:43 तक, लाभ अमृत 10:43 से 2:04 तक, शुभ 3:44 से 5:25 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:06

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी, आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों कार्यों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मानसिक तनाव रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 42 प्रभात जालोर, मंगलवार 20 मई, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

राहुल गाँधी ने जयराम रमेश को चुप कराया

'यह समय नहीं है, थरूर के खिलाफ बयानबाजी का, जब थरूर भारत के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व कर रहे हैं, भारत का पक्ष विदेश में समझाने-सुनाने के लिए'

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 मई। राहुल गांधी ने शशि थरुर को लेकर कांग्रेस में चल रहे अंदरुनी संघर्ष पर फिलहाल विराम लगा दिया है। उन्होंने पार्टी के मीडिया प्रमुख जयराम रमेश को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि वे थरुर के खिलाफ बयानबाज़ी बंद करें, खासकर तब, जब शशि थरुर अंतरराष्ट्रीय दौरों पर राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक, राहुल गांधी ने स्पष्ट किया है कि इस समय पार्टी के आतंरिक मतभेद उजागर करना सही नहीं होगा, इससे अंतरराष्ट्रीय मंच पर ऐसा लगेगा कि कांग्रेस ''तुच्छ राजनीति'' कर रही है। पार्टी नेताओं का कहना है कि इस मुद्दे को प्रतिनिधिमंडल के लौटने के बाद निपटाया जाएगा।

कांग्रेस के भीतर यह जर्बदस्त धारणा है कि जयराम रमेश ने मीडिया विभाग के प्रमुख पद का फायदा उठाते हुए अपनी सीमाओं से आगे बढ़कर यह बयान दे दिया कि सरकार को कांग्रेस की ओर से भेजे गए चार नामों को राहुल गांधी ने मंजूरी दी है।

दिलचस्प बात यह है कि सरकार ने उन चार नामों में से तीन को खारिज कर दिया और केवल आनंद शर्मा को स्वीकार किया। इसके अलावा, उन्होंने शशि थरुर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राहुल ने जयराम से यह भी कहा, कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर, यह मैसेज नहीं जाना चाहिए कि कांग्रेस अपनी अन्दरूनी लड़ाई में उलझी है, जबकि मसला देश की सुरक्षा व पाकिस्तान के आतंकवाद का है, अतः पार्टी के अन्दरूनी राजनीति के मामले बाद में निपटाये जा सकते हैं जब प्रतिनिधि मण्डल विदेश से लौट आये।
- कांग्रेस का एक धड़ा यह भी मान रहा है, कि पार्टी को इस लफड़े में पड़ना ही नहीं चाहिए, कि भारत सरकार किस-किस को प्रतिनिधि मण्डल में शामिल करना चाहती है।
- जयराम रमेश शायद यह कहकर, कि राहुल गाँधी ने चार नाम चुने हैं, जो प्रतिनिधि मण्डल में पार्टी की ओर से जायेंगे, बेवजह राहुल को इस विवाद में डाल दिया।
- अब, जयराम रमेश अपनी सफाई में यह कह रहे हैं कि संसदीय मामलों के मंत्री रिजिजू ने उनसे वो चार नाम मांगे, जिन्हें कांग्रेस प्रतिनिधि मण्डल में शामिल कराना चाहती है, इसलिए उन्होंने चार नाम भेजे थे। पर, रिजिजू ने इस बात से इन्कार किया कि उन्होंने कांग्रेस से चार नाम मांगे थे।
- दूसरी ओर शशि थरूर व मनीष तिवारी ने भी अपनी ओर से स्पष्ट किया कि वे प्रतिनिधि मण्डल में शामिल होंगे, अगर सरकार उन्हें आमंत्रित करती है।
- यह भी उल्लेखनीय है कि गुलाम नबी आज़ाद का नाम भी शामिल किया गया है, सरकार की ओर से प्रतिनिधि मण्डल में, हालांकि, वे अब कांग्रेस में नहीं हैं।

गैर सरकारी सदस्यों के बिना स्कूल फीस रिविज़न कमेटी की सुनवाई

जयपुर, 19 मई। स्कूल फीस से जुड़े विवादों की सुनवाई को लेकर रिवीज़न कमेटी नहीं बनने से जुड़े मामले में शिक्षा विभाग की ओर से हाईकोर्ट में शपथ पत्र पेश किया गया है। मामले में अदालत मंगलवार को सुनवाई करेगी।

शिक्षा सचिव कृष्ण कुणाल की ओर से पेश शपथ पत्र में कहा गया है कि कमेटी के गैर सरकारी सदस्यों के पद खाली चल रहे हैं और नियुक्ति राज्य सरकार को करनी है। वहीं, आरटीआई अधिनियम में कमेटी के कोरम का भी कोई उल्लेख नहीं है। ऐसे में रिवीज़न

- शिक्षा सचिव ने हाईकोर्ट से कहा कि राज्य सरकार ने गैर सरकारी सदस्यों की नियुक्ति नहीं की है। अब गैर सरकारी सदस्यों के बिना 26 मई से सुनवाई शुरू होगी।

प्रार्थना पत्रों के लंबित प्रकरणों को देखते हुए इन गैर सरकारी सदस्यों की नियुक्ति का इंतजार नहीं कर 26 मई से इन मामलों की सुनवाई की जाएगी।

दरअसल भारतीय विद्या भवन विद्याश्रम की ओर से हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई है। याचिका में अधिवक्ता प्रतीक कासलीवाल ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता स्कूल की फीस निर्धारण को लेकर स्कूल फीस कमेटी ने निर्णय लिया था। इस कमेटी के आदेश

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ममता बनर्जी सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल विदेश भेजने के कार्यक्रम से अलग हुईं

सुदीप बन्दोपाध्याय व यूसुफ पठान को प्रतिनिधि मण्डल जाने से इन्कार करवाया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 मई। केन्द्र सरकार ने तृणमूल कांग्रेस को, पाकिस्तान के साथ तनाव की स्थिति पर भारत का पक्ष रखने के लिए विश्व के प्रमुख देशों की यात्रा करने वाले सांसदों के प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। लेकिन पार्टी के संसदीय दल के दो सदस्यों ने अंतिम समय पर प्रतिनिधिमंडल से नाम वापस ले लिया। प्रारंभ में केन्द्र ने सुदीप बंद्योपाध्याय को प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। लेकिन अंतिम सूची तैयार होने से पहले ही सुदीप ने भारत का पक्ष रखने जैसे कार्यों से खुद को अलग कर लिया।

दूसरा नाम यूसुफ पठान का सामने आया, जो चयन प्रक्रिया की रणनीतिक सोच को दर्शाता था। सत्तारूढ़ पार्टी ने उन्हें आमंत्रित किया, क्योंकि वे निस्संदेह भारत का प्रतिनिधित्व प्रभावी रूप से करते। लेकिन, ऐसा प्रतीत होता है कि ममता बनर्जी ने हस्तक्षेप किया और पठान को प्रतिनिधिमंडल से हटने के लिए मजबूर किया।

यह एक अपमानजनक स्थिति थी, क्योंकि यह प्रतिनिधिमंडल विभिन्न देशों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला था। पठान को इसलिए भी हटाया गया क्योंकि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सरकार, जबकि, इन दोनों को जरूर शामिल करना चाहती थी, ऑपरेशन सिन्दूर में भारत का पक्ष विदेश में प्रस्तुत करने के लिए, विदेश भेजने के लिए।
- ममता बनर्जी ने यह तर्क दिया कि सरकार ने इन दोनों सांसदों से सीधे बात कैसे की, प्रतिनिधि मण्डल में शामिल करने के बारे में, क्योंकि यह अधिकार तो पार्टी का है, कि किसको बाहर भेजना चाहिए। सांसदों से सीधे बात करके, सरकार ने पार्टियों के अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण करने की चेष्टा की है।
- पर, ममता बनर्जी अपने वोट बैंक को प्रसन्न रखने के लिए मुस्लिम मतदाताओं के पक्ष में सबसे ज्यादा आक्रामक नज़र आना चाहती हैं, अतः सांसदों को प्रतिनिधि मण्डल में शामिल होने से रोका था। अगले वर्ष बंगाल में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव की दृष्टि से ममता बनर्जी ने ऑपरेशन सिन्दूर को समझाने के लिए अपने सांसदों को, विदेश जाने से रोका, अब ममता बनर्जी के लिए, मुस्लिम मतदाताओं का सबसे बड़ा हितैषी होने की छवि बनाना और भी जरूरी हो गया है, क्योंकि कई मुस्लिम पार्टियों ने अगले चुनाव में अपने उम्मीदवारों को खड़ा करने का निर्णय ले लिया है।

आगामी अगस्त से भारत में ''गैलप पोल्स'' शुरू होगें

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 19 मई। भारत में पहली बार एक रियल-टाइम पोलिटिकल परसैप्शन इंडैक्स (पी पी आई) लाने की तैयारी है। ''पोल फर्स्ट'' नामक यह नई वैब मैग्ज़ीन 3 अगस्त से लॉन्च होगी, जिसे भारत का ''गैलप'' कहा जा रहा है। गैलप एक विश्व प्रसिद्ध अमेरिकी शोध, विश्लेषण और परामर्श संस्था है, जो मुख्य रूप से जनमत सर्वेक्षण के लिए जानी जाती है। पोलिटिकल अप्रूवल रेटिंग्स को संस्थागत रूप देने की दिशा में यह एक साहसिक कदम है।

पी पी आई हर सप्ताह प्रधानमंत्री की लोकप्रियता, विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों में जनमत, और क्षेत्रीय स्तर पर मददाता झुकाव को वैज्ञानिक डेटा के आधार पर ट्रैक करेगा और प्रकाशित करेगा। यह प्रयास 25 वर्षों के राजनैतिक डेटा विश्लेषण के अनुभव पर आधारित है।

इसकी साप्ताहिक रिपोर्टें सार्वजनिक होंगी, तथापि, चुनिंदा पत्रकारों और संपादकों के लिए एक सीमित सब्सक्रिप्शन ऑफर 1 लाख रु. प्रतिमाह की कीमत पर उपलब्ध बताया जा रहा है, जिसमें शामिल हैं - कच्चे डेटा तक पूर्ण पहुंच (सी एस वी फॉर्मेट में, सैम्पल बेट्स सहित), सत्यापन उपकरण (उत्तरदाताओं की संख्या और टाइम स्टैम्प्स), सार्वजनिक रिलीज से पहले रिपोर्ट छापने के लिए 3 घंटे का समय तथा विश्लेषण की पूरी पारदर्शिता।

अपने परिचय में ''पोल फर्स्ट'' कहता है कि यह भारत में एक पारदर्शी, सत्यापन करने योग्य और राजनीतिक भावना नापने की सुसंगत प्रणाली है, जो हमारे लोकतंत्र में लंबे समय से अनुपस्थित रही है।

पोल फर्स्ट के पोलिटिकल मार्केटिंग कंसल्टैंट श्रेणिक जैन द्वारा भेजे गये ईमेल में कहा गया है कि अगर यह पहल आपके न्यूजरूम की समयबद्ध और तथ्य आधारित राजनैतिक रिपोर्टिंग की प्रतिबद्धता से मेल खाती है, तो पोल फर्स्ट आपको 3 अगस्त, 2025 को सुबह 11 बजे से पहले ही अपने प्लेटफॉर्म पर शामिल करना चाहेगा।

यह हर सप्ताह भारत की राष्ट्रीय राजनीतिक भावना को ट्रैक करेगा, भारत के राजनीतिक मूड पर नजर रखेगा, दो महत्वपूर्ण प्रश्न पूछेगा और उनका विश्लेषण करेगा कि वे क्यों प्रासंगिक हैं। यह प्रधानमंत्री मोदी की ओवर ऑल अप्रूवल रेटिंग देगा और पूछेगा- क्या आप प्रधानमंत्री के कामकाज से संतुष्ट हैं? और यदि आज चुनाव होते, तो आप किस पार्टी या गठबंधन को वोट देते?

यह रिपोर्ट 2024 के वोट जैसे मुद्दों पर भी ध्यान केन्द्रित करेगी, क्योंकि 2024 के लोकसभा चुनावों में एनडीए और इंडिया गठबंधन के बीच का अंतर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह पोल, जो लगातार साल भर ही चलता रहेगा, भारत का राजनीतिक वातावरण व राजनीतिक दलों व नेताओं की जनता में लोकप्रियता लगातार आंकेगा तथा अपना आकलन जनता के सामने लगातार रखेगा।
- इस से, हर मुद्दे पर जनता क्या सोच रही है, ज्ञात होगा, तथा राज्य व केन्द्रीय सरकार को अपना रवैया व सोच बदलने का मौका मिलता रहेगा।

कॉलेज शिक्षकों का रिटायरमैंट भी 65 साल में क्यों नहीं हो-हाईकोर्ट

जयपुर, 19 मई। राजस्थान हाई कोर्ट ने पूछा है कि मैडिकल शिक्षकों की तरह कॉलेज शिक्षकों की रिटायरमैंट उम्र 65 साल क्यों न कर दी जाए। हाई कोर्ट ने इस बारे में प्रमुख विधि सचिव, प्रमुख उच्च शिक्षा सचिव, कॉलेज शिक्षा आयुक्त और यूजीसी सहित अन्य को

- केन्द्र सरकार, यूजीसी, मेडिकल शिक्षक तथा डेढ़ दर्जन राज्यों में शिक्षकों की रिटायरमैंट आयु 65 वर्ष की जा चुकी है।

नोटिस भेजकर जवाब माँगा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस आनंद शर्मा की खंडपीठ ने ये आदेश डॉ. विश्राम लाल बैरवा और अशोक कुमार अग्रवाल सहित, अन्य की याचिकाओं पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता सुप्रिय और अक्षय दत्त शर्मा ने अदालत को बताया कि केन्द्र सरकार और यूजीसी कॉलेज शिक्षकों की रिटायरमैंट उम्र 65 साल करने का प्रावधान कर चुके हैं। प्रदेश में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रिलायंस ने एशिया का वर्ष 2025 का सबसे बड़ा अन्तरराष्ट्रीय ऋण प्राप्त किया

इस ऋण का पहला भाग 2.43 बिलियन डॉलर का है, तथा दूसरा भाग 67.7 बिलियन जापानी मुद्रा येन का है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 मई। रिलांयस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) ने 2.9 बिलियन डॉलर की ऐतिहासिक डुएल करैंसी सिंडिकेटेड लोन डील हासिल की है, यह 2025 में एशिया की सबसे बड़ी डील है और पिछले दो वर्षों में किसी भी भारतीय कंपनी द्वारा लिया गया यह सबसे बड़ा कर्ज़ है। यह वित्तीय सौदा दो भागों में विभाजित है: एक भाग में 2.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर और दूसरे भाग में 67.7 बिलियन (लगभग 462 मिलियन डॉलर) जापानी येन। विश्व की कुल 55 देशों के बैंकों ने इसमें भाग लिया, जिससे यह वर्ष का एशिया का सबसे बड़ा ऋण देने वाला संघ बन गया।

यह डील केवल एक वित्तीय उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह आरआईएल की वित्तीय ताकत और वैश्विक बाज़ारों में भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा पर एक ठोस विश्वास की मुहर है। बढ़ती ब्याज दरों, भू-राजनीतिक तनाव और सीमित पूंजी के दौर में इतना बड़ा लोन हासिल करना रिलांयस की बेहतरीन क्रेडिट प्रोफाइल और वैश्विक आकर्षण को दर्शाता है।

इस विश्वास के मूल में रिलांयस का विविधतापूर्ण मॉडल है, जो ऊर्जा, पेट्रोकैमिकल्स, टैलिकॉम (जियो), रिटेल, डिजिटल सेवाएं और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में फैला हुआ है। प्रत्येक क्षेत्र में रिलायंस अग्रणी है, जिससे एक संतुलित पोर्टफोलियो बनता है, जो किसी एक क्षेत्र में आए उतार-चढ़ाव से कंपनी को बचाता है। यही विविधता निवेशकों को दीर्घकालिक आय और स्थिरता के प्रति आश्वस्त करती है।

इस विश्वास को और मजबूती मिलती है रिलांयस की इन्वेस्टमैंट-ग्रेड क्रेडिट रेटिंग्स से, जो भारत की संप्रभु रेटिंग से भी ऊपर हैं। मूडीज ने आरआईएल को बीएए2 और फिंच ने बीबीबी रेटिंग दी है, दोनों ही भारत से एक स्तर ऊपर हैं। उभरते बाज़ारों की कंपनियों में यह दुर्लभ उपलब्धि है, जो कंपनी की सुदृढ़ कॉर्पोरेट गवर्नेंस, मजबूत पूंजी प्रवाह और अनुशासित वित्तीय प्रबंधन को दर्शाती है।

यह हाई रेटिंग रिलायंस को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ भी देती है। इससे पूंजी तक आसान पहुंच मिलती है, जो ग्रीन एनर्जी और 5जी जैसी परियोजनाओं के लिए बेहद अहम है। वित्तीय संस्थान उन कंपनियों को ऋण देना पसंद करते हैं, जिनका दृष्टिकोण स्थिर हो और भुगतान का इतिहास मजबूत हो, रिलांयस की ऐसी ही छवि है।

इस ऋण की डुएल करैंसी संरचना आरआईएल की परिपक्व वित्तीय रणनीति को दर्शाती है। विभिन्न मुद्राओं में ऋण को विभाजित करना मुद्रा विनिमय दरों की अस्थिरता से बचाव, उधारी लागत में कमी और विविध नकदी स्रोतों तक पहुंच सुनिश्चित करता है। विशेष रूप से, येन मुद्रा का होना यह दर्शाता है कि जापानी निवेशक भारतीय कॉर्पोरेट्स को ऋण देने में रुचि दिखा रहे हैं और रिलांयस बहु-विनियोग आधारों से पूंजी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह ऋण देने के लिए 55 अन्तरराष्ट्रीय स्तर के बैंक मिले और इस ऋण के लिए फायनैंस का इन्तजाम किया।
- यह ऋण एशिया का इस वर्ष का सबसे बड़ा ऋण है।
- हालांकि, इस वर्ष एशिया की लगभग सभी बड़ी कम्पनियां और बैंक ऋण लेने व देने में काफी कतरा रहे हैं, अतः यह विशेष रूप से सराहनीय है, कि फायनैंशियल दृष्टि से इस मायूस से वातावरण में भी रिलायंस ने इतना बड़ा ऋण लेकर, मायूसी के वातावरण में छेद कर दिया है।

विदेश मंत्री के वक्तव्य ने प्र.मंत्री मोदी को अटपटी स्थिति में डाला

विदेश मंत्री ने मीडिया के समक्ष कहा कि भारत ने पाकिस्तान को आतंकवादी विरोधी ऑपरेशन (ऑपरेशन सिन्दूर) के बारे में पहले ही बता दिया था

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 19 मई। सुरक्षा संबंधी एक बहुत बड़ी गलती, जिसमें विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर लिप्त हैं, के रहस्योद्घाटन के बाद एक बड़ा राजनैतिक तूफान खड़ा हो गया है। बताया जाता है कि जयशंकर ने पाकिस्तान को उसके आतंकी ठिकानों पर भारत की स्ट्राइक से जुड़ी अतिसंवेदनशील कार्यवाही की जानकारी दे दी थी। इस रहस्योद्घाटन के बाद, राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषज्ञ तो इसकी कड़ी आलोचना कर ही रहे हैं, इससे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर भी दबाव बढ़ गया है। प्रधानमंत्री, विदेश नीति की इस नाकामी पर आक्रोश और आलोचनाओं से घिर गये हैं।

वरिष्ठ राजनयिकों और गुप्तचर विभाग के अधिकारियों के अनुसार, डॉ. जयशंकर के मीडिया को दिये गये इस बयान, कि भारत की आतंकी-विरोधी कार्यवाही की अग्रिम सूचना पाकिस्तान को दे दी गई थी, ने इस सामरिक लीकेज के बारे में गंभीर चिन्ताएं खड़ी कर दी हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि हो सकता है कि इस अभूतपूर्व कदम से, असावधानीवश, हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे प्रमुख आतंकी आकाओं को इस सटीक हमले से बचने का समय मिल गया हो और ऑपरेशन सिंदूर नामक इस मिशन के असली उद्देश्य को क्षति पहुंची हो।

एक शीर्ष विदेश नीति विश्लेषक ने कहा, ''यह मात्र एक राजनयिक गलत कदम नहीं है, यह निर्णय लेने में की गई एक बेहद गंभीर गलती है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकती है।''

उन्होंने आगे कहा, ''एक सुनियोजित सैन्य कार्यवाही की जानकारी आतंकियों को पनाह और संरक्षण देने वाले देश को दे देने से सैन्य कार्यवाही का प्रयोजन ही समाप्त हो जाता है तथा इस कदम के पीछे के रणनैतिक इरादे के बारे में प्रश्न खड़े होते हैं।

पूर्व विदेश मंत्री यशवन्त सिन्हा ने राजनैतिक मोर्चा संभालते हुए, सर्वोच्च स्तर पर जवाबदेही की मांग की है। एक इंटरव्यू में उन्होंने इस मामले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की खामोशी पर प्रश्न खड़े किये हैं तथा कहा है कि जनता सुस्पष्ट स्पष्टीकरण की हकदार है। सिन्हा ने कहा, ''यह केवल जयशंकर की चूक नहीं है, यह राष्ट्र-हित की रक्षा करने के मामले में नेतृत्व की असफलता है।''

भाजपा तथा उसकी वैचारिक मार्गदर्शक संस्था आर एस एस के अंदरूनी सूत्र भी बढ़ते जा रहे आंतरिक असंतोष की पुष्टि कर रहे हैं। भगवा खेमे के अनेक लोगों का मानना है कि मोदी की मजबूत नेता की छवि पर इस विदेश नीति-कुप्रबन्धन की काली छाया पड़ी है। यह आलोचना इसलिए और प्रबल हुई है, क्योंकि अमेरिकन राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने एयर स्ट्राइक के बाद, अप्रत्याशित रूप से युद्ध विराम के लिए मध्यस्थता करने का दावा किया, और प्रधानमंत्री ने उनके दावे को नियंत्रित करने की दिशा में कोई कदम नहीं उठाया।

भाजपा के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने नामोल्लेख न करने की शर्त पर बताया, ''ट्रम्प के हस्तक्षेप तथा उनके प्रचार से भारत की छवि, उसकी अपनी क्षेत्रीय लड़ाई में गौण हो गई। - - यह एक कूटनीतिक लज्जा की बात थी तथा प्रधानमंत्री को इसे पूरी सख्ती से रोकना चाहिए।''

विपक्षी नेताओं ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए, मोदी की विदेश नीति को प्रतिक्रियाशील एवं असंगत बताया है। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने इस प्रकरण को ''कूटनीति एवं नेतृत्व की असफलता'' बताया है तथा भारत के पिछले वर्ष की राष्ट्रीय सुरक्षा की कार्यवाहियों पर श्वेत पत्र जारी करने की मांग की है।

राजनैतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि चूंकि दबाव बनता जा रहा है, इसलिए प्रधानमंत्री मोदी के लिए यह जरूरी है कि वे इस पूरे मामले को नियंत्रण में लेने के लिए, इस मुद्दे को सीधे ही अपने हाथ में लें। राष्ट्रीय सुरक्षा, जो मोदी के राजनीतिक प्रभाव की धुरी रही है, के बारे कमजोरी की धारणा उन्हें चुनाव में महंगी पड़ सकती है।

इस विवाद के परिणामस्वरूप, ऑपरेशन सिंदूर के संचालन तथा उसमें विदेश मंत्रालय की भूमिका की संसदीय जांच की मांग जोर पकड़ती जा रही है। लोगों का मानना है कि इस समय प्रधानमंत्री की खामोशी उन सवालों को और बड़ा रूप दे रही है, जो एक नाज़ुक मोड़ पर लड़खड़ाती हुई विदेश नीति से जुड़े हैं।

- विदेश मंत्री के इस वक्तव्य से कई सवाल उठते हैं। क्या इस सूचना ने आतंकवादियों के संगठनों को अपने आतंकवादी शिविर छोड़ कर अन्यत्र चले जाने का मौका दे दिया। और इसीलिए हाफिज़ सईद व मसूद अज़हर बच निकले।
- पूर्व विदेश मंत्री यशवन्त सिन्हा सबसे ज्यादा सक्रिय रहे, प्र.मंत्री को इस मुद्दे पर कठघरे में खड़ा करने में।
- यहां तक कहा जा रहा है, कि विदेश मंत्रालय की इस त्रुटि ने मोदी सरकार की विदेश नीति की कमज़ोरियों को उजागर कर दिया है, और ऑपरेशन सिन्दूर की सबसे बड़ी कमज़ोरी थी, तो विदेश नीति का ''फेलियर'', भारत के पक्ष में कोई भी देश, सिवाय रूस के, खड़ा नजर नहीं आया।
- साथ ही ट्रम्प के इस दावे ने, कि उसने मध्यस्थता करके व व्यापारिक हितों का तकाजा करके दोनों देशों के बीच 'सीज़ फायर' करवाया, भारत की व मोदी की मजबूत छवि पर, ग्रहण सा लगा दिया था, और विदेश मंत्रालय इस छवि को अभी तक पूर्णतया साफ नहीं कर पाया है।

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने लोंगेवाला का दौरा किया

उपेंद्र द्विवेदी ने जैसलमेर से कच्छ क्षेत्र तक फैले रेगिस्तान में भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और बीएसएफ की और से त्वरित और समन्वित परिचालन प्रतिक्रिया देखी

जैसलमेर, (निसं.)। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैनिकों की अनुकरणीय भूमिका के लिए बधाई देने और भारतीय वायु सेना तथा सीमा सुरक्षा बल के साथ समन्वय में की गई संयुक्त कार्रवाइयों की समीक्षा करने के लिए रेगिस्तानी क्षेत्र में सोमवार कोणार्क कोर के अग्रिम क्षेत्रों में लोंगेवाला का दौरा किया।

पीआरओ डिफेंस राजस्थान लेफ्टिनेंट कर्नल निखिल धवन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने जैसलमेर से कच्छ क्षेत्र तक फैले रेगिस्तान में भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और बीएसएफ की और से त्वरित और समन्वित परिचालन प्रतिक्रिया देखी। इन संयुक्त कार्रवाईयों ने न केवल दुश्मन के इरादों को कुंद किया, बल्कि पश्चिमी मोर्चे पर परिचालन प्रभुत्व बनाए रखने में एक नया समन्वय भी स्थापित किया। ऑपरेशन सिंदूर के हिस्से के रूप में, भारतीय सेना ने भारतीय वायुसेना और बीएसएफ के साथ घनिष्ठ समन्वय में निगरानी परिसंपत्तियों और वायु रक्षा प्रणालियों की तेजी से तैनाती की। नागरिक प्रशासन के समर्थन के साथ संरेखित हथियार प्रणालियों और अन्य परिचालन सक्षमताओं की कैलिब्रेटेड स्थिति ने प्रभावी क्षेत्र वर्चस्व और संभावित खतरों को बेअसर करना सुनिश्चित किया।

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैनिकों की अनुकरणीय भूमिका के लिए बधाई देने लोंगेवाला पहुंचे।

कोणार्क कोर के सैनिकों के साथ बातचीत के दौरान, सेना प्रमुख ने अंतर्राष्ट्रीय सीमा की रक्षा में उनकी वीरता, अटूट प्रतिबद्धता और दृढ़ निश्चय की सराहना करते हुए एक उत्साही शाबाश का आव्हान किया। उन्होंने सैनिकों की उनकी सतर्क कार्रवाईयों के लिए प्रशंसा की, जिसमें दुश्मन के ड्रोन घुसपैठ को सफलतापूर्वक बेअसर करना भी शामिल है, जिसने रेगिस्तानी क्षेत्र में दुश्मन द्वारा किसी भी दुस्साहस को प्रभावी ढंग से रोका।

जनरल द्विवेदी ने कमांडरों और इकाइयों की उनकी व्यावसायिकता, उच्च मनोबल और परिचालन योजनाओं के एकीकृत निष्पादन के लिए भी सराहना की। उन्होंने सेना की सम्मान की परंपरा और निर्णायक ताकत के साथ भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए इसकी अड़िग तत्परता पर प्रकाश डाला, राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा करने और गतिशील सुरक्षा वातावरण के बीच उच्च परिचालन तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय सेना की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। गर्मियों की चरम स्थितियों के बीच कठोर रेगिस्तानी इलाकों में सेवा करने वाले पुरुषों और महिलाओं के धैर्य की सराहना करते हुए, सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने राष्ट्रीय उद्देश्यों की रक्षा में उनकी अथक सेवा के लिए प्रशंसा व्यक्त की।

हिरण शिकार का आरोपी गिरफ्तार

एक अन्य आरोपी की तलाश जारी

नोखा, (निसं)। नोखा वन विभाग ने 14 मई को रायसर में हुए हिरण शिकार मामले में एक आरोपी को सोमवार को गिरफ्तार किया। वहीं आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया है।

पकड़े गए आरोपी की पहचान रामलाल पुत्र लूणाराम नायक के रूप में हुई है। क्षेत्रीय वन अधिकारी महावीर रूहिल के अनुसार, मुखबिर की सूचना पर टीम ने नोखा बस स्टैंड से आरोपी को हिरासत में लिया। उन्होंने बताया कि इस मामले में शामिल एक अन्य आरोपी की गिरफ्तारी के लिए कार्रवाई जारी है।

गिरफ्तारी में वन विभाग की एक विशेष टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस टीम में रामनारायण वनपाल, जगदीशदान वनपाल, ताराचंद वनपाल, श्रवण तर्ड सहायक वनपाल, कैलाश बिश्नोई सहायक वनपाल, सुखाराम वन रक्षक, ओमप्रकाश वन रक्षक और सहीराम वनरक्षक शामिल थे। आरोपी को गिरफ्तारी के बाद न्यायालय में पेश किया गया है।

चाकूबाजी के मामले में दो गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में टोंक वृताधिकारी राजेश विद्यार्थी सुपरविजन में गठित विशेष टीम ने थाना सदर में दर्ज प्रकरण में फरार दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

घटना गत 14 मई की है, इस दौरान गोविन्द पुत्र हीरालाल कीर व उसके दो अन्य साथी जब अपनी पिकअप से जयपुर से सब्जी बेचकर वापस आने के दौरान पक्का बंधा टोंक पर खाना खाने हेतु रूके तो उसी दौरान वहां पर मौजूद कैलाश, मनराज व राहुल गुर्जर व अन्य द्वारा परिवादी व उसके साथी दीपक, सुनिल, आकाश के साथ चाकू व लोहे के पाईपों से मारपीट कर आरोपियों ने 73 हजार रूपये व एक चांदी की चैन को छीन लिया।

घटना में घायलों को सआदत अस्पताल पहुंचाया गया। बाद में घटना के सम्बन्ध में परिवादी गोविन्द कीर द्वारा रिपोर्ट दर्ज करवाई गई तथा पुलिस की टीम ने अनुसंधान शुरू किया। घटना की गंभीरता को देखते हुए विशेष टीम ने संभावित स्थानों पर लगातार दबिश देकर रविवार 18 मई की रात्रि को आरोपी मनराज पुत्र देवकरण गुर्जर, राहुल पुत्र कजोडमल गुर्जर को बाद अनुसंधान के गिरफ्तार किया गया है।

DIRECTOR WORKS (EO)
Rajasthan University Of Veterinary & Animal Science, Bikaner (Raj.)
क्रमांक : F( )/DW(EO)/RAJUVAS/2025-26/148 - 158 दिनांक :- 17/05/2025

निविदा सूचना संख्या 02 वर्ष 2025-2026

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की ओर से विश्वविद्यालय में विभिन्न स्थानों पर निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी में, इस विश्वविद्यालय में एवं अन्य विश्वविद्यालयों में, राज्य सरकार एवं राज्य सरकार के अधिकृत संगठनों तथा केन्द्र सरकार व केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों, जो कि राज्य सरकार के उपयुक्त श्रेणी के समकक्ष हो, पंजीकृत संवेदको से ई–टेन्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन निविदा प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बधित विवरण वेब साईट www.dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp, www.rajuvas.org, www.sppp.rajasthan.gov.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

राज.संवाद/सी/25/2519 निदेशक कार्य

राजस्थान सरकार
कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड सवाई माधोपुर
राजकीय आयुर्वेद औषधालय के पास, सामान्य चिकित्सालय परिसर, सवाई माधोपुर
फोनः 07462-233169, email-eemhswm@gmail.com

क्रमांकः182 **अल्पकालीन ई-टेन्डिरिंग निविदा सूचना 02/2025-26** दिनांक-09/05/25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत राज्य के स.माधोपुर व बूंदी में विभिन्न स्थानों पर रू. 520.00 लाख के 10 निर्माण कार्य/विद्युत कार्य हेतु राजस्थान सरकार के समकक्ष उपयुक्त श्रेणी में विद्युत कार्य/निर्माण कार्य हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणीके संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायेंआमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.Org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN No.-MHS2526WSOB00915, MHS2526WSOB00916, MHS2526WSOB00917 MHS2526WSOB00918, MHS2526WSOB00919, MHS2526WSOB00921, MHS2526WSOB00922 MHS2526WSOB00923, MHS2526WSOB00925, MHS2526WSOB00926

DIPR/C/6319/2025 अधिशाषी अभियन्ता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खण्ड सवाई माधोपुर

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर
क्रमांक निदे / अ.ख.अ. नीलामी / निलामी ((ERCC/RCC 11)/2025/ई-11088

ई-नीलामी विज्ञप्ति संख्या-(ERCC/RCC 11)/2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के नियम-36 व 37 के तहत विभाग द्वारा इस विज्ञिप्त से अप्रधान खनिजों के प्रभावशील खनन पट्टों / क्वारी लाईसेंसों व परमिट क्षेत्रों से निर्गमित होने वाले खनिजों पर अधिशुल्क /अधिक अधिशुल्क, परमिट शुल्क, प्रिमीयम शुल्क, डी.एम.एफ.टी., आर.एस.एम.ई.टी. एवं अन्य शुल्क संठाहण के कुल 26 ठेके खुली ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर इच्छुक बोलीदाताओं से बोली आमंत्रित की जाती है। ठेकों से संबंधित विस्तृत विवरण जैसे-ठेका क्षेत्र, खनिज, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण व ई-ऑक्शन की प्रक्रिया एवं मुख्य शर्तें विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध है।

DIPR/C/6167/2025 (दीपक तंवर) निदेशक

राजस्थान सरकार
कार्यालय सहायक खनि अभियंता, खान एवं भूविज्ञान विभाग, टोंक
खनिज भवन सिविल लाईन टोंक
email : ame.tonk@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- सखअ/टोंक/निविदा/2025 दिनांक :-

नीलामी सूचना प्रकाशन 02/2025-26

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जिला टोंक के विभिन्न स्थानों परनिम्नानुसार जब्तशुदा खनिज बजरी के अवैध स्टॉक की नीलामी हेतु सीलबंद लिफाफे में दरें आमंत्रित की जात है –

क्र. सं.	बजरी स्टॉक स्थल	खनिज	खनिज की अनुमानित मात्रा (टनों में)	बयाना/ अमानता राशि	न्यूनतम बोली राशि (रु.)
1.	जिला टोंक के ग्राम सोहेला में सिवायचक भूमि खसरा संख्या 2383/1 पर ग्राम विकास अधिकारी, सोहेला की सुपुर्दगी में चिन्हत ढेरियों के रूप में पड़ है।	बजरी	1400	70,000	7,00,000
2.	जिला टोंक के ग्राम डोडवाडी में खेल मैदान पर ग्राम विकास अधिकारी की सुपुर्दगी में चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	725	39,875	3,98,750
3.	जिला टोंक के ग्राम मंडावर में चरागाह भूमि के खसरा संख्या 36 में 375 टन तथा खसरा संख्या 37 में 500 टन चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	875	48,125	4,81,250
4.	जिला टोंक की तहसील देवली के ग्राम रामथला विभिन्न स्थानों पर चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	375	20,625	2,06,250
5.	जिला व तहसील टोंक की मोटूका चैक पोस्ट पर पड़ी शेष बजरी पड़ी है।	बजरी	400	22,000	2,20,000
6.	जिला टोंक की तहसील पीपलू की ग्राम पंचायत नानेरा में खसरा संख्या 525/3 सिवाय चक भूमि (बिसलपुर विस्थापित लोगों के हेतु आरक्षित) ग्राम पंचायत सरपंच की सुपुर्दगी में चिन्हित ढेरी के रूप में पड़ी बजरी	बजरी	150	8,250	82,500
7.	जिल टोंक की तहसील उनियारा के ग्राम खेडली बालाजी चौराहा टोंक सवाईमाधोपुर स्टेट हाइवे पर खातेदारी भूमि खसरा नं. 121 पर चिन्हित ढेरी के रूप में पड़ी है।	बजरी	60	3,300	33,000
8.	जिला व तहसील टोंक के ग्राम चिरोंज में चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	144	7,920	79,200
9.	जिला टोंक की तहसील टोडाराय सिंह के ग्राम सेतियावास में खरेडा सेतिवास मार्ग पर रास्ते दाहिनी ओर चिन्हित ढेरी के रूप में पड़ी है।	बजरी	85	4,675	46,750
10.	जिला व तहसील टोंक के पक्का बंधा क्षेत्र में चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	300	16,500	1,65,000
11.	जिला टोंक की तहसील उनियारा के ग्राम रूपवास ककोड रोड पर चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	540	29,700	2,97,000
12.	जिला टोंक कीत हसील पीपलू के ग्राम कैलाशपुरी में सरकारी स्कूल के पास दक्षिण दिशा की ओर चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	350	19,250	1,92,500
13.	जिला टोंक की तहसील पीपलू के ग्राम कुरेडी में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के खेल मैदान में चिन्हित ढेरियों के रूप में पड़ी है।	बजरी	850	46,750	4,75,500
14.	जिला टोंक की तहसील उनियारा के ग्राम खेडा हाथीभाटा के राजकीय प्राथमिक विद्यालय के खेल मैदान खसरा नं. 522/149 पर चिन्हित ढेरी के रूप में	बजरी	60	3,300	33,000
15.	जिला व तहसील टोंक के ग्राम अरनियाकेदार के ग्राम सेवा सहकारी समिति में पड़ी चिन्हित ढेरियों के रूप में	बजरी	1019	56,045	5,60,450
16.	जिला टोंक के पुलिस थाना दूनी में कार्यालय सहायक खनि अभियंता, टोंक द्वारा जब्त बजरी चिन्हित ढेरी के रुप में पड़ी है।	बजरी	100	5,500	55,000
17.	जिला टोंक के पुलिस चौकी, पीप्याडा में कार्यालय सहायक खनि अभियंता, टोंक द्वारा जब्त बजरी चिन्हित ढेरी के रूप में पड़ी है।	बजरी	70	3,850	38,500

उक्त नीलामी में भाग लेने हेतु नीलामी प्रपत्र राशि रु. 1,000/- का डी.डी./बैंकर्स चैक सहायक खनि अभियंता, टोंक के नाम से जमा कराकर किसी भी कार्यदिवस में दिनांक 26 मई, 2025 सायं 05.00 बजे तक कार्यालय सहायक खनि अभियंता, टोंक से प्राप्त किये जा सकते है। उक्त जब्तशुदा खनिज बजरी हेतु सीलबंद लिफाफे में दरें बिड फॉर्म के साथ दिनांक 27 मई, 2025 दोपहर 01.00 बजे तक जमा की जायेगी। प्राप्त सीलबंद लिफाफे कमेटी द्वारा 27 मई, 2025 को सायं 03.00 बजे उपस्थित नीलामी दरदाताओं के समक्ष खोली जायेगी, नीलामी की शर्तें एवं विस्तृत जानकारी किसी भी कार्यदिवस में कार्यालय समय में मोटिस बोर्ड पर कभी भी देखी जा सकती है एवं नीलामी की जानकारी विभागीय वेबसाईट पर भी उपलब्ध रहेगी।

DIPR/C/6144/2025 सहायक खनि अभियंता, टोंक

172 किलोग्राम डोडा-चूरा बरामद, तस्कर गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की रायला थाना पुलिस ने लोडिंग टेम्पो में डोडा-चूरा की तस्करी करने वाले एक तस्कर को गिरफ्तार कर 172.310 किलोग्राम डोडा-चूरा बरामद किया है। जैसे-जैसे तस्कर तस्करी करने के नए-नए हथकंडे जुगाड़ अपना रहे हैं, वैसे-वैसे पुलिस भी इन तस्करों के खिलाफ कार्रवाई को अंजाम दे रही है। पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान एक कोरियर लोडिंग टेंपो से 172.310 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा बरामद कर एक तस्कर को गिरफ्तार किया है।

रायला थाना प्रभारी बछराज चौधरी टीम के साथ थाने के बाहर नाकाबंदी कर वाहनों की जांच कर रहे थे। नाकाबंदी के दौरान कोरियर लोडिंग टेम्पो शेखावाटी कोरियर कार्गो नाम का टेम्पो आता हुआ दिखाई दिया जिसकी तलाशी ली तो चालक द्वारा सन्तोषपद जवाब नहीं दिया गया जिसके चलते तलाशी लेने पर पैकिंग कार्टून में अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा भरा हुआ था, जिसकी कीमत बाजार में लाखों रुपये आंकी जा रही है। आरोपी तस्कर 24 वर्षीय कोतवाली थाना चित्तौड़ निवासी अमन खान पिता अनवर मिराशी को गिरफ्तार किया है।

रायला थाना पुलिस ने डोडा-चूरा बरामद एक जने को गिरफ्तार किया।

प्रो. अनुकृति शर्मा ने तुर्की सम्मेलन में भागीदारी से किनारा किया

कोटा, (निसं)। तुर्की व अज़रबैजान से व्यापार व पर्यटन का बहिष्कार के बाद शिक्षाविद् अनुसंधान का भी बहिष्कार कोटा से सामने आया है। 'देश पहले, सब कुछ बाद में' इस भावना को चरितार्थ करते हुए कोटा विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित शिक्षाविद् डॉ.अनुकृति शर्मा ने तुर्की में होने वाले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन से अपना नाम वापस ले लिया है। रजिस्ट्रार भावना शर्मा ने बताया कि तुर्की के दो प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों एमओयू निरस्त कर दिये गए हैं।

■ अनुकृति शर्मा अब तुर्की नहीं जाएंगी, यूनिवर्सिटी ऑफ कोटा ने सभी समझौते रद्द किए

पहलगाम में हुए जघन्य आतंकी हमले और तुर्की द्वारा भारत-विरोधी रुख अपनाने के मद्देनजर कोटा विश्वविद्यालय ने त्वरित कार्रवाई की है। वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. शर्मा जो विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय मामलों की निदेशक भी हैं, ने 22-25 मई को दिदिम, तर्की में होने वाले द्वितीय अंतरराष्ट्रीय पर्यटन एवं सांस्कृतिक अध्ययन कांफ्रेस में भागीदारी से हाथ खींच लिया है। अपने आवेदन में उन्होंने स्पष्ट उल्लेख किया, "वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए और अपने राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित होकर मैं इस यात्रा से अपनी वापसी की सूचना देती हूँ।" उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय हित सर्वोपरि है और अकादमिक जगत भी इससे अछूता नहीं है। यह कदम भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और अखंडता के हित में उठाया गया है।

रजिस्ट्रार भावना शर्मा ने बताया कि इस कदम के साथ ही, विश्वविद्यालय ने तुर्की के दो प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के साथ स्थापित समझौता ज्ञापनों को भी निलंबित कर दिया है। इनमें सिनोप विश्वविद्यालय के साथ जनवरी 2021 में हस्ताक्षरित मेवलाना विनिमय कार्यक्रम प्रोटोकॉल और अफयोन कोकातेपे विश्वविद्यालय के साथ मई 2024 में किया गया सहयोग समझौता शामिल है। भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष से 15 मई को प्राप्त पत्र में तुर्की सहित कई देशों द्वारा भारत-विरोधी गतिविधियों का मुद्दा उठाया गया था, जिसके बाद यह कदम उठाया गया। अनुकृति शर्मा के नाम से जारी टर्किश एयरलाइंस की ई-टिकट बुक थी, उनके 21 मई को इज़मिर से इस्तांबुल और 25 मई को इज़मिर से इस्तांबुल होते हुए दिल्ली के लिए विमान टिकट पहले ही बुक करा लिए गए थे।

बिजली के पोल से गिरने से युवक की मौत

टोंक, (निसं)। पीपलू थाना क्षेत्र में मोहनाबाद ढाणी के पास एक युवक की बिजली के पोल से गिरने से मौत हो गई। शनिवार की रात्रि को सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची, जहां मृतक युवक को उसके साथीयों ने पीपलू अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां उसकी मौत हो गई।

पीपलू थाना अधिकारी उदयवीर सिंह ने बताया कि मृतक युवक के साथ छह-सात युवक और भी थे, वे भी यहां आकर पोल पर चढ़ने का कारण नहीं बता रहे हैं, ये युवक चोरी करने की नीयत से आए थे या फिर अन्य कारण से घटना स्थल आए थे, यह जांच के बाद पता लगेगा। पुलिस ने एमआईयू यूनिट को बुलाकर मौका मुआयना करवाया तथा इस मामले मृतक के परिजनों को सूचना दी गई। परिजनों ने बताया मृतक दिनेश मीणा बिना बताए अपने साथियों के साथ घर से शनिवार को निकला था, वह यहां क्यों आया, इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। दिनेश अविवाहित था, वह प्राइवेट काम करता था। उसके एक भाई की पहले दुर्घटना में मौत हो चुकी है। घटना में मृतक समेत छह अन्य युवक पिकअप और एक बाइक से बीती रात घटना स्थल आए थे, यह युवक पोल से गिरा तो दो दोस्त दिनेश मीणा को बाइक पर लेकर अस्पताल पहुंचे और कहा कि यह एक्सीडेंट में घायल हो गया, उसे भर्ती कर लिया, कुछ देर बाद उसकी मौत हो गई।

बेटे ने मां पर हमला किया

कोटपूतली, (निसं)। समीपवर्ती सीकर जिले के पाटन थाना क्षेत्र के बागावाली में एक बेटे ने आपसी कहासुनी में अपनी ही मां के सिर पर धारदार हथियार से वार कर दिया, जिससे वह बुरी तरह लहूलुहान हो गई, जिसे यहां के राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल भर्ती कराया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति में उसे जयपुर रैफर कर दिया। बीडीएम अस्पताल के ट्रोमा सैंटर के नर्सिंग अधिकारी श्रीराम सराधना ने बताया कि आपसी कहासुनी में कमला पत्नी गोपीराम बावरिया के सिर पर उसके ही पुत्र भगताराम ने धारदार हथियार से वार कर दिया।

■ महिला को जयपुर रैफर किया

अचानक चली तेज हवाओं के कारण फतहसागर झील में नाव पलटने से बची, 35 यात्री सुरक्षित

अचानक मौसम पलटने और तेज हवाओं के कारण नाव का संतुलन बिगड़ गया था, हादसा टला

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर शहर की फतहसागर झील में सोमवार शाम मोतीमगरी छोर से नेहरू गार्डन लेकर जा रही एक नाव अचानक चली तेज हवाओं के कारण हिचकोले खाने लगी और पलटते-पलटते बच गई। नाव में 35 पर्यटक सवार थे। नाव को रस्सी के सहारे नेहरू गार्डन छोर पर ले जाया गया, जहां दूसरी नावों की मदद से सभी को सुरक्षित बाहर निकाला गया। नाव अगर झील के बीच में होती तो हवाओं के तेज थपेड़ों से वह पलट सकती थी। गनीमत रही कि नाव नेहरू गार्डन के समीप पहुंच गई थी और पर्यटकों की सूझबूझ से उसे गार्डन की दीवार से सटाकर धीरे-धीरे नेहरू गार्डन की जेटी तक ले जाया गया। दीवार से हवा का प्रेशर कम हो गया और बड़ा हादसा होने से टल गया।

जानकारी के अनुसार शहर की फतहसागर झील के उज्जैन ड्रीम कंपनी द्वारा संचालित उदयपुर बोट क्लब की नाव पर्यटकों को नेहरू गार्डन ले जा रही थी। इस दौरान शहर में अचानक मौसम पलट गया और पलटे मौसम के साथ चली हवाओं के साथ नाव हिचकोले खाने लगी और असंतुलित होने लगी। नाव का संतुलन बिगड़ते देख उसमें सवार पर्यटक घबरा गए। पर्यटकों के बीच मौजूद एक युवक पिंटु चौधरी ने सभी से नाव का संतुलन बनाए रखने के लिए कहा और नाव चालक से रस्सी लेकर नेहरू गार्डन पहुंचा और धीरे-धीरे नाव को रस्सी के सहारे नेहरू गार्डन ले जाया गया। घटना की जानकारी पर जिला कलेक्टर नमित मेहता ने भी पहुंच कर स्थिति का जायजा लिया तथा वहां मौजूद अधिकारियों को निर्देश दिए।

उदयपुर की फतहसागर झील पर चली हवाओं के कारण बोट संचालन स्थल पर बंधे टेंट उड़कर फट गए।

■ पर्यटकों को नेहरू गार्डन लेकर जा रही थी नाव, गार्डन के समीप पहुंचने से पहले हवाओं के साथ हिचकोले खाने लगी

■ नाव को रस्सी के सहारे नेहरू गार्डन छोर पर ले जाया गया, जहां दूसरी नावों की मदद से सभी को सुरक्षित बाहर निकाला गया

यूडीए आयुक्त राहुल जैन ने बताया कि नाव हवा चलने से पहले ही जेटी से रवाना हो चुकी थी, जैसे ही तेज हवा शुरू हुई शेष नावों का संचालन रोक दिया गया था। अंधड़ से जेटी को थोड़ा नुकसान पहुंचा है, इसलिए फिलहाल नाव संचालन रोक दिया गया है। हादसे के कारणों की जांच की जाएगी।

इस बीच सूचना पाकर यूडीए, एनडीआरएफ की टीम आदि भी मौके पर पहुंचे। नाव में सवार सभी यात्रियों को सुरक्षित रूप से रेस्क्यू कर लिया गया। सूचना पर शहर विधायक ताराचंद जैन, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा सहित कई नेता भी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली।

सार-समाचार

पाली में जुआ खेलते 8 युवक गिरफ्तार

पाली, (नि.सं.)।पाली में कोतवाली थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दो अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर जुआ खेल रहे 8 लोगों को पकड़ा और उनके कब्जे से 66 हजार 470 रुपए और ताश के पत्ते बरामद किए। चुनाराम जाट ने बताया कि रविवार को कोतवाली थाना पुलिस को मुखबिर से इनपुट मिला। इस पर कोतवाल अनिल कुमार विश्नोई के नेतृत्व में टीम शहर के केशव नगर सेंचुरियन गार्डन रोड पर दो अलग-अलग स्थानों पर दबिश दी। जहां से जुआ खेल रहे 8 लोगों को पकड़ा और उनके कब्जे से 66 हजार 470 रुपए और ताश के पत्ते जब्त किए। इस कार्रवाई में भंवररूराम, कॉन्स्टेबल महेश कुमार की मुख्य भूमिका रही। पाली के भैरूघाट घांचियों का बास निवासी 24 साल के प्रवीण पुत्र जगदीश कुमार, पाली के सुंदर नगर निवासी 29 साल के धर्मेन्द्रसिंह पुत्र भवानी सिंह, शहर के महात्मा गांधी कॉलोनी निवासी 36 साल के कमलेश पुत्र कालूराम, पाली के बापूनगर विस्तार निवासी 29 साल के अनिश पुत्र एलेक्स थोम्स, पाली के पुराना हाऊसिंग बोर्ड निवासी 45 साल के पंकज पुत्र सीताराम, आदर्श नगर निवासी 40 साल के अतुल पुत्र ललित कुमार, पुराना हाऊसिंग बोर्ड निवासी 40 साल के दिनेश पुत्र जवरीलाल और पुराना हाऊसिंग बोर्ड निवासी 52 साल के मुकेश पुत्र नवरतनलाल को गिरफ्तार किया।

तिरंगा यात्रा के लिए वर्चुअल बैठक हुई

जालोर, (कासं)। ऑपरेशन सिंदूर कि सैनिकों के सम्मान में तिरंगा यात्रा को लेकर भाजपा प्रदेश स्तरीय वर्चुअल बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में तिरंगा यात्रा के सफल आयोजन को लेकर चर्चा की गई।बैङ्क में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड,तिरंगा यात्रा प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सैनी,प्रदेश संयोजक अंकित चेसी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। तिरंगा यात्रा जिला सहसंयोजक सुरेश सोलंकी ने बताया कि प्रदेश भर में जिला स्तर व विधानसभा स्तर पर तिरंगा यात्राओं का आयोजन हो रहा है। जालौर जिले में जालौर विधानसभा आहोर विधानसभा व भीनमाल विधानसभा में अब तक तिरंगा यात्राओं का आयोजन हो गया है। तिरंगा यात्राओं में देश भक्त,आम जन समाजसेवी संगठनों की प्रमुख भागीदारी निभाई जा रही है। वर्चुअल बैठक में तिरंगा यात्रा जिला संयोजक व पूर्व मंत्री भूपेंद्र देवासी, जिला सह संयोजक सुरेश सोलंकी, जालौर विधानसभा संयोजक व भाजपा जिलाध्यक्ष गजेंद्र सिंह सिसोदिया, सहसंयोजक उदय सिंह,आहोर विधानसभा संयोजक बिसनसिंह, सह संयोजक भवर पूरी,भीनमाल विधानसभा से महेंद्र सोलंकी, इंद्र सिंह राणावत,सांचौर विधानसभा से भावेश सोनी सहित अपेक्षित पदाधिकारी जुडे।

आहोर में क्रिकेट प्रतियोगिता शुरू

आहोर, (निसं)। कुमावत शिक्षण एवं सामाजिक संस्थान आहोर के बैनर तले आहोर के खेल मैदान में कुमावत कुम्हार प्रजापत रात्रिकालीन चार दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ विधायक छगनसिंह राजपुरोहित के मुख्य आतिथ्य में किया गया। उपप्रधान अमृतलाल प्रजापत, जिला परिषद सदस्य मांगीलाल प्रजापत, नगरपालिका के पूर्व चेयरमैन सुजाराम प्रजापत, सहायक अभियंता विद्युत इन्द्र कुमार प्रजापति,बेनिटोन जामनगर के निदेशक हंसाराम प्रजापति बतौर विशिष्ठ अतिथि के रूप में मौजूद रहे। विधायक राजपुरोहित ने प्रतियोगिता में भाग ले रही सभी टीमों, भामाशाहों व मौजूद लोगों का आभार जताया। नगरपालिका के पूर्व चेयरमैन सुजाराम प्रजापत ने कहा कि समाज की यह पहली क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई है। प्रतियोगिता में सहयोग देने वाले सभी भामाशाहों व समाज बंधुओं को धन्यवाद दिया। संस्थान अध्यक्ष हेमताराम प्रजापत ने कहा कि खिलाडियों को हमेशा खेल खेल की भावना से खेला जाना चाहिए। प्रथम मैच बेनीटोंन पुणे व वावडी,द्वितीय मैच केएसएसएस आहोर व सांवरिया सेठ इलेवन स्टार आहोर, तृतीय मैच चामुंडा सीसी आहोर व स्टार इलेवन सुगालिया जोधा, चतुर्थ मैच कुमावत इलेवन जोडा व पौनेचा वॉरियर्च जालोर के बीच खेला गया। जिसमें बेनिटोन पुणे, केएसएसएस आहोर,स्टार इलेवन सुगालिया जोधा व कुमावत इलेवन जोडा ने जीत हासिल की गई। मेन ऑफ द मैच चार टीमों खिलाड़ियों को दिया गया। मंच संचालाक श्रवण कुमार प्रजापत ने किया।

बाइक की टक्कर से युवक की मौत

पाली, (नि.सं.)। पाली में एक बाइक सवार वृद्ध ने पैदल जा रहे युवक को टक्कर मार दी। हादसे में दोनों घायल हो गए। इलाज के लिए हॉस्पिटल लाए। जहां जांच के बाद युवक को मृत घोषित कर दिया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस ने उसकी बॉडी हॉस्पिटल की मॉर्च्यूरी में रखवाई। घायल वृद्ध का उपचार जारी है। जानकारी के अनुसार पाली जिले के मारवाड़ जंक्शन क्षेत्र के कराडी गांव के निकट रविवार देर शाम को पैदल जा रहे मारवाड़ जंक्शन निवासी 20 वर्षीय मदन पुत्र ताराराम को बाइक सवार 55 वर्षीय बस्तीराम पुत्र जसाराम ने टक्कर मार दी। हादसे में दोनों घायल हो गए। इलाज के लिए दोनों को रविवार रात को पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया। जहां जांच के बाद मदन को मृत घोषित कर दिया गया। उसके सिर में गहरी चोट लगी थी। घायल वृद्ध बस्तीराम का बांगड़ हॉस्पिटल में उपचार जारी है।

कानून व्यवस्था रखने के लिए रूट मार्च

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सोमवार को सुबह पुलिस ने मुख्य सडक़ों पर रूट मार्च निकाला। प्राप्त जानकारी के अनुसार आमजन में पुलिस के प्रति विश्वास व सुरक्षा बढ़ाने को लेकर यह रूट मार्च जालोरी गेट से रवाना हुआ जो नई सडक़ होते हुए घंटाघर पहुंचकर संपन्न हुआ। पुलिस कमिश्नर राजेंद्र सिंह के निर्देश पर कमिश्नरेट में अवैध गतिविधियों पर रोकथाम के लिए पुलिस हर रोज नया टास्क पूरा कर रही है। इसी के तहत आज सुबह शहर की मुख्य सड़कों पर पुलिस के अधिकारियों व जवानों ने रूट मार्च निकाला। रूट मार्च में पुलिस कमिश्नर राजेन्द्रसिंह, डीसीपी पूर्व आलोक श्रीवास्तव व डीसीपी यातायात अमित जैन भी शामिल हुए। पुलिस लाइन के जाब्ता के अलावा सभी थानाधिकारी भी शामिल हुए।

दो हुक्का बार पर पुलिस ने कार्रवाई की

जोधपुर, (कासं)। बासनी पुलिस ने कैफे की आड़ में चल रहे दो हुक्काबारों पर कार्रवाई की और संचालकों के खिलाफ केस दर्ज किया। बासनी थाने के एसआई सुरेश कुमार ने फाइनल ऑप्शन कैफे एल्कोबेक्स रोड पर कैफे की आड़ में चल रहे हुक्काबार को पकड़ा। तिंवरी मथानिया निवासी अजुर्न मेघवाल के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। इसी तरह उक्त रोड पर ही ला टैरेजा किचन पर दबिश दी तो वहां पर भी अवैध रूप से हुक्का बार संचालन होता पाया जाने पर संचालक शेरगढ़ रायसर निवासी धनाराम के खिलाफ मामला बनाया गया। रेस्टोरेंट- कैफे से हुक्का सामठी को जब्त किया गया।

मानसिक अवसाद में युवक ने दी जान

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर शहर के प्रतापनगर सदर स्थित पंचोलिया नाडी में रहने वाले एक युवक ने अपने घर में फंदा लगाकर जान दे दी। वह मानसिक रूप से बीमार था और दवाइयां चल रही थी। पुलिस ने शव को कार्रवाई के बाद परिजन के सुपुर्द कर दिया।प्रतापनगर सदर बस्ती चार खम्बा मगरा पूंजला निवासी गजेन्द्र पुत्र चेतनप्राकश मेघवाल ने मर्ग में रिपोर्ट दी कि उसका भाई राकेश पंचोलिया नाडी प्रतापनगर सदर क्षेत्र में रहता था। वह मानसिक रोगी था और दवाइयां चल रही थी। उसने घर में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। शव को कार्रवाई के बाद परिजन के सुपुर्द कर दिया गया।

90 लाख की लागत से बन रही है सड़क

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर के बैक चौराये से लेकर महाराणा प्रताप चौराया तक 90 लाख की लागत से बन रही है डामर सड़क। जहां जहां पानी भराव है वहां बनेगी सी सी सड़क। सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता दिलीप परिहार ने निर्माण कार्य गुणवत्ता की जांच की व पूर्व पार्षद तिलोक चौधरी ने जहां जहां जल भराव है वहां सी सी सड़क बनाने का सुझाव दिया। इस अवसर पर मुकेश गोस्वामी तथा शांतिलाल खत्री, कैलाशसिह राजपुरोहित आदि उपस्थित रहे।

जुआरियों को पकड़ हवालात पहुंचाया

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में सूरसागर थाने के एसआई कैलाश पंचारिया ने मावडियों की घाटी सूरसागर क्षेत्र में जुआ खेल रहे संताराम पुत्र रावतराम, बींजाराम पुत्र मांगाराम, सोहन उर्फ भाभो पुत्र भट्टाराम को गिरफ्तार कर दांव पर लगी 33 सौ रूपए की ताश की जोड़ी जब्त की। इसी तरह सूरसागर थाने में तैनात की हैड कांस्टेबल लीला ने रावटी रोड सूरसागर क्षेत्र में ताश के पत्तों से जुआ खेल रहे सुखदेव पुत्र संताराम, सुरज पुत्र भीमाराम , बांडाराम पुत्र मांगीलाल को पकड़ा और 700 रूपए जब्त किए।

फ्लैगशिप योजनाओं की प्रभावी मॉनिटरिंग करें : डॉ. गावंडे

जालोर, (कासं)। जिला कलैक्टर प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बैठक में जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने जिले में केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न फ्लैगशिप योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए विभागीय अधिकारियों को प्रभावी मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए।

उन्होंने जल जीवन मिशन, आरडीएसएस योजना, लाडो प्रोत्साहन योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन सहित विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को इन योजनाओं के माध्यम से अधिक से अधिक पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने जिले में पेयजल सप्लाई की स्थिति, जल परिवहन कार्यों तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में दी जा रही बिजली आपूर्ति की जानकारी लेकर आमजन के लिए सुचारू पेयजल एवं विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जिला कलैक्टर ने संपर्क पोर्टल पर प्राप्त हुए प्रकरणों की विभागवार समीक्षा की तथा विभागीय अधिकारियों को संपर्क पोर्टल पर प्राप्त आमजन की परिवेदनाओं का त्वरित रूप से निस्तारण करने के निर्देश दिए।

उन्होंने जिले में राज्य सरकार के निर्देशानुसार माह के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय गुरुवार को आयोजित होने वाली त्रिस्तरीय जनसुनवाई एवं सम्पर्क समाधान व्यवस्था शिविरों में प्राप्त परिवादों के निस्तारण की समीक्षा करते हुए कहा कि विभागीय अधिकारी जनसुनवाई के दौरान जिले के नागरिकों की परिवेदनाओं का समयबद्धता के साथ गुणवत्तापूर्ण समाधान करें तथा शेष रहे प्रकरणों को सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज कर उनका जल्द निस्तारण कर आमजन को राहत प्रदान की जावें।

इस अवसर पर जिला परिषद की अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी चिदंबरा परमार, पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. गिरधरसिंह सोढ़ा, जिला रसद अधिकारी आलोक झरवाल सहित कई जने उपस्थित रहे।

जालोर के कलैक्ट्रेट में कलैक्टर कलैक्टर डॉ.प्रदीप के .गावंडे अध्यक्षता में बैठक हुई। फोटो-राष्ट्रदूत

काव्य कलश संस्थान की गोष्ठी आयोजित

जोधपुर, (कासं)। साहित्य संस्थान "काव्य-कलश" की गोष्ठी पावटा सी रोड स्थित कार्यालय में संपन्न हुई।

इस काव्य गोष्ठी में हिंदी, उर्दू औ राजस्थानी भाषा के 15 शीर्ष कलमवीरों ने अपने 3 घंटे के अनमोल पलों को राष्ट्र-प्रेम की अविरल धारा में प्रवाहित कर अक्षुण्ण एवं अविस्मरणीय बना दिया। गोष्ठी का ओजपूर्ण आगाज प्रदीप मिश्रा ने- "घर घर तिरंगा है" से किया।

डॉ. छगनराज राव ने- "गीत गौरव गाथा के आज तुमको सिखलाता हूं.." तो डॉ. दीपा परिहार ने- "अठै मां तो सागै-सी खड़ी-सी दिखै.." सुनाकर मां को आँखों के सामने जीवंत लाकर खड़ा कर दिया।

दीपिका रूहानी ने भी- "मां कैसी होती है" सुनाकर सबको भाव-वि ल कर दिया। प्रसिद्ध गजलकार खुरशीद खैराड़ी ने आग उगलती ताजा गजल- "पूछकर धर्म मार दी गोली" प्रस्तुत की। गजलकार अशफाक अहमद फौजदार ने- "तूफां को तो पूरी छूट करे वो कुछ भी, अदना सी हवा पर निगाहबानी बहुत है" उम्दा गजल पेश की।

"गर्मी में कहां अब सड़कें सूनी लगती, आबादी दिन दूनी रात चौगुनी लगती" कविता सुनाकर हसराज हसा ने असलियत भरे व्यंग्य का छमका लगा दिया। डिंगल भाषा की मिठास दिलीपराव श्रीमाली दलपत की रचना- "जल तो जीवन-रेख कहिजे." के कवित्त में महसूसी गई।

जाने-माने शायर असरार आहिल ने अपने कलाम- "देखकर डूबता सूरज ये ख़याल आता है.." सुनाकर सबकी आंखों को भिगो दिया। ऑलराउंडर फनकार एडवोकेट एन.डी. निंबावत ने मधुर गीत औ खूबसूरत कव्वाली पेशकर मन मोह लिया। उभरते कवि उमेश दाधीच ने- "मैं तो एक मुसाफ़िर ठहरा, तू मेरी बात ना ही कर.." महती कविता के माध्यम से अपनी संभावनाए जतला दी।

ऊर्जावान रचनाधर्मी राजेश मोहता ने -"पत्थरों के महल में सो-सोकर लोग मुर्दा हो गए.." सुनाकर श्रोताओं की चेतना को झिंझोड़ दिया। छोटी बहर की कविताओं के लिए प्रसिद्ध नवीन पंछी ने- "कहा करती मां, फुर्सत मिले तब मिलने आना, आज फुर्सत है; मगर मां नहीं है.."सुनाकर ऑखों को नम कर दिया। वरिष्ठ कवि श्याम गुप्ता शान्त ने अपनी आधी सदी पुरानी व्यंग्य कविता- "मैं चमचा हूं अफसर का" सुनाकर सदन में हास्य-रस ऊंड़ेल दिया।

संस्था के उजले भविष्य की संकल्पना के उद्बोधन के साथ अध्यक्ष मनोहरसिंह राठौड़ ने अपनी राजस्थानी व्यंग्य रचना -"म्हारो चेहरो कठै गयो" का वाचनकर कार्यक्रम का समापन किया। काव्य-गोष्ठी का सचालन संस्था के उपाध्यक्ष अशफ़ाक अहमद फौजदार ने किया।

कायस्थ महासभा के गिरीश माथुर प्रदेश उपाध्यक्ष बने

जालोर में कायस्थ महासभा जोधपुर संभाग की बैठक में कार्यकारिणी का विस्तार किया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा जोधपुर संभाग की एक महत्वपूर्ण बैठक सोमवार को आयोजित की गई।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनिल कोलरी के निर्देशना में और प्रदेश अध्यक्ष कुलदीप माथुर की सहमति से संगठन विस्तार की दृष्टि से कई नियुक्तियाँ की गई। संगठनात्मक सशक्तिकरण के तहत जोधपुर संभागीय अध्यक्ष राजेन्द्र माथुर की संस्तुति पर चित्रांश गिरीश माथुर (जिला परिषद सदस्य) को प्रदेश उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसी क्रम में सुशील माथुर को जालोर जिलाध्यक्ष,चित्रांशी, प्रेमलता माथुर को जालोर जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष, चित्रांश, नितेश भटनागर को जालोर जिला युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इन नियुक्तियों में महिला प्रकोष्ठ की संभागीय अध्यक्ष श्रीमती संगीता भटनागर और युवा प्रकोष्ठ के संभागीय अध्यक्ष सुनिल माथुर की संस्तुति प्रमुख रही। कार्यक्रम में प्रदेश युवा माथुर बॉक्सर, भुवन माथुर, राकेश नेपालिया, उमेश करण माथुर, कृष्णा माथुर, निशा माथुर सहित कई गणमान्य चित्रांशजन उपस्थित रहे। सभी नव मनोनित पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर गरिमामय अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में संगठन की भावी योजनाओं, समाज में युवाओं और महिलाओं की भागीदारी, और सांस्कृतिक-सामाजिक गतिविधियों के विस्तार पर भी चर्चा की गई। आयोजन ने समाज में एकजुटता और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित किया।

पटेल ने कांग्रेस को कोसा

जोधपुर, (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारत की विदेश नीति पर सवाल उठाने के मामले में पलटवार किया है। उन्होंने कांग्रेस को नसीहत देते हुए कहा कि कांग्रेस को नकारात्मक राजनीति नहीं करनी चाहिए।

सोमवार को सर्किट हाउस में मीडिया से अनौपचारिक बात करते हुए जोगाराम पटेल ने गोविंद सिंह डोटासरा की ओर से ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारत की विदेश नीति को लेकर दिए गए बयान पर कहा कि कोई देश लिखित में समर्थन या विरोध नहीं करता है। एक भी देश ने भारत की कार्रवाई का खंडन नहीं किया व गलत नहीं बताया। सभी देश आतंकवाद के खिलाफ हैं। मंत्री पटेल ने कहा कि तुर्किए का बहिष्कार लगातार जारी रहेगा। पाकिस्तान को तुर्कए ने अपने ड्रोन दिए थे, ऐसे में उसको इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।हमारे व्यापारी और देश के लोग लगातार बहिष्कार जारी रखेंगे।

डोटासरा के एसआई भर्ती रद्द करने के मामले मे दिए बयान पर जोगाराम ने कहा कि आरएसएस का इस भर्ती से कोई लेना देना नहीं है। वह राष्ट्रभक्ति से जुड़ा संगठन है। कांग्रेस को नकारात्मक राजनीति नहीं करनी चाहिए। कोर्ट पर टिप्पणी नहीं करूंगा, लेकिन भर्ती पर सरकार नियमानुसार कार्रवाई करेगी।

जे.डी.ए. ने सांगरिया में अवैध कॉलोनी पर कार्रवाई की

जोधपुर, (नि.सं.)। जोधपुर विकास प्राधिकरण आयुक्त उत्साह चौधरी के निर्देशानुसार प्राधिकरण के अतिक्रमण निरोधक दस्ते द्वारा अवैध एवं अनाधिकृत कॉलोनियों पर कार्यवाही के क्रम में सोमवार को ग्राम सांगरिया में अवैध कॉलोनी पर कार्यवाही की गई।

प्राधिकरण सचिव के आदेशानुसार मुख्य नियंत्रक एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विनीता एवं तहसीलदार जोन-3 संगीता चारण के निर्देशन में जेडीए दस्ते द्वारा ग्राम सांगरिया के खसरा संख्या 143 मय बट्टा नम्बर वगैरह एवं खसरा संख्या 190 मय बट्टा नम्बर वगैरह का निरीक्षण किया गया। दस्ते द्वारा निरीक्षण के दौरान उक्त भूमि पर अनाधिकृत रूप से निर्मित कंक्रीट व ठोवल सड़कें, भूखंडों के मुटाम इत्यादि को दो जेसीबी की सहायता से ध्वस्त कर खुर्द-बुर्द किया गया। दस्ते द्वारा मौके पर अवैध कॉलोनाइजर को सख्त हिदायत दी गयी कि आईन्दा कृषि भूमि पर प्राधिकरण की बिना सक्षम स्वीकृति एवं बिना भू-उपयोग परितर्वन करवाये किसी प्रकार की योजना को विकसित नहीं करें अन्यथा प्राधिकरण द्वारा नियमानुसार सख्त कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। कार्यवाहियों के दौरान प्रवर्तन अधिकारी जोगेंद्रसिंह चौधरी, प्रवर्तन निरीक्षक अनिल कुमार शर्मा एवं योगेश गहलोत, भू-अभिलेख निरीक्षक जीवनसिंह, पटवारी सुरेंद्र सिंह राठौड़, पुलिस थाना बासनी का जाब्ता मय जेडीए दस्ता मौजूद रहे।

शिविर शुरू

जोधपुर, (कासं)। आर्य समाज शास्त्रीनगर और शिवालिक पब्लिक सीनियर सेकेंडरी विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में सात दिवसीय बालिका आत्मरक्षा शिविर का शुभारंभ समारोहपूर्वक सूथा क्षेत्र में किया गया।

शिविर संयोजक रामदयाल आर्य ने बताया कि इस विशेष शिविर में पचास से अधिक बालिकाओं को शारीरिक प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मरक्षा, समाज और राष्ट्र रक्षा के लिए सक्षम बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

पीड़ितों को मिलेगी सहायता राशि

जोधपुर, (कासं)। राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी राजस्थान पीड़ित प्रतिकर योजना के अंतर्गत सोमवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जोधपुर महानगर के सभागार में अध्यक्ष जिला एवं सत्र न्यायाधीश जोधपुर महानगर अजय शर्मा की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया।

विभिन्न न्यायिक एवं प्रशासकीय अधिकारियों की उपस्थिति में कुल 24 लाख 82 हजार 500 रुपए की सहायता राशि प्रकरणों में पात्र पीड़ितों के लिए स्वीकृत की गई, जिसे शीघ्र संबंधित पक्षकारों को वितरित किया जाएगा।

बैठक में जिला कलेक्टर गौरव अठावाल, विशेष न्यायाधीश (पॉक्सो न्यायालय) डॉ. मनीषा चौधरी, मोटरयान दुर्घटना दावा अधिकरण के न्यायाधीश बुलाकी दास व्यास, पारिवारिक न्यायालय के न्यायाधीश सतीश चन्द्र गोदारा, श्रम एवं औद्योगिक न्यायालय के न्यायाधीश देवेन्द्र सिंह नागर, मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट सुरेन्द्र चौधरी, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (पश्चिम) कैलाश पारीक, हाईकोर्ट एडवोकेट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष रतनाराम ठोलिया, राजकीय अभिभाषक दिनेश शर्मा तथा प्राधिकरण के सचिव राकेश रामावत सहित अन्य सदस्यों ने भाग लिया।

डिस्ट्रिक्ट कॉफ्रेन्स में रोटरी कम्यूनिटी कापर्स जालोर ने भागीदारी की

जालोर,(का.सं.)। देसाई ऑडिटोरियम, आर्ट्स कॉलेज, कडी (गुजरात) में आयोजित डिस्ट्रिक्ट कॉफ्रेन्स में रोटरी कम्यूनिटी कापर्स जालोर का प्रतिनिधिमंडल उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुआ।

इस डिस्ट्रिक्ट कॉफ्रेन्स का आयोजन रोटरी कम्यूनिटी कुडी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन, प्रार्थना और स्वागत उद्बोधन के साथ हुआ। सम्मेलन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत आरसीसी इकाइयों द्वारा किए गए सेवाकार्यों की समीक्षा तथा अनुभव साझा करना रहा। आरसीसी सीनियर सिटीजन जालोर के अध्यक्ष नारायण भट के नेतृत्व में सम्मिलित प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे ा नैना राम सुंदेशा, जगदीश प्रसाद दवे, पी. एल. सोनगरा, अम्बालाल सुंदेशा, मुकेश खंडेलवाल, तथा रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3055 के जनरल सेक्रेटरी कानाराम परमार के नेतृत्व में रोटरी क्लब जालोर के अध्यक्ष संजय सुंदेशा और सचिव सीए जीशान अली भी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर आरसीसी जालोर के सदस्य मुकेश खंडेलवाल ने मंच से जालोर में आरसीसी द्वारा किए गए उल्लेखनीय सामाजिक एवं सामुदायिक विकास कार्यों की जानकारी साझा की, जिसे सम्मेलन में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने सराहा। सम्मेलन में डिस्ट्रिक्ट गर्वनर रो. मोहन पाराशर ने ए बेटर वे टू सर्व विषय पर प्रेरणादायी संबोधन दिया। उनके साथ पीडीजी रो. डॉ. मनमोहन सिंह ने आरसीसी का भविष्य और प्रासंगिकता विषय पर अपने विचार साझा किए।

परिवार मौताणे में गांव गया, चोर आभूषण ले गए

जोधपुर, (कासं)। शहर के निकट बनाड़ स्थित रमजान का हत्था, लक्ष्मण नगर में एक सूने मकान में चोरी हो गई। परिवार के लोग मौताणे पर गांव नागौर गए थे। वापिस लौटने पर चोरी का पता लगा। अज्ञात चोरों ने सूने मकान का भरपूर फायदा उठाया और जो हाथ लगा वह सब ले गए। तकरीबन 30 तोला सोना और चांदी के आभूषण चुराने में कामयाब हुए है। पीड़ित की तरफ से बनाड़ थाने में इस बाबत केस दर्ज करवाया गया है। आस पास लगे सीसीटीवी फुटेजों से अब चोरों की पहचान के साथ तलाश की रही है।

मामले में मूलत: नागौर जिले के कोतवाली थानान्तर्गत गिवरिया-ओड बस्ती हाल लक्ष्मणनगर, रमजान का हत्था निवासी दिनेश सोनी पुत्र गोविन्दराम सोनी ने रिपोर्ट दी है। इसमें बताया कि पिछले दो तीन दिनों से उसका घर सूना था। उसके नाना का निधन होने पर वह परिवार सहित नागौर मूल गांव चल गया। कल वापिस आया तो पता लगा कि घर के ताले टूटे पड़े है। अज्ञात चोरों ने अलमारी बक्सों के ताले तोडक़र उसमें रखे सोने- चांदी के आभूषण चोरी कर लिए। घर से रामनवमी सेट 90 ग्राम, रखड़ी सेट 40 ग्राम, गले का हार 25 ग्राम, झेला पता मम्मी का 125 ग्राम, 4 सोने की अंगुठियां तकरीबन 40 ग्राम सोना तकरीबन 25-30 तोला है। वहीं चांदी में 7 पायल जोड़ी 70 ग्राम चांदी की और परचूनी सामान तक चोरी कर ले गए।

परिंडा वितरण एवं पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

पाली में परिन्दों के दाना पानी के लिए लिये परिंडों का वितरण किया। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। पाली में परिन्दों के लिये परिंडा अभियान के तहत परिंडों का वितरण किया गया एवं छात्रा अध्यापिकों के द्वारा परिंडा अभियान का संदेश जन- जन तक पहुचने के लिए महाविद्यालय में पाली जिले के परिंदों के लिए परिंडा अभियान के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रुप बनाकर 110 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। जिसमें 25 चार्ट बनाये गये।

चार्ट का जिला कलैक्टर, सीडीईओ सीपी जायसवाल, डीईओ राहुल राजपुरोहित के अवलोकन एव जांच कराने के उपरांत प्रथम ग्रुप नम्बर 5, (दिव्यांशी सोनी, गरिमा, मनीषा आर्य, पल्लवी एवं रुचिता द्वितीय स्थान ग्रुप नम्बर 1 (दक्षिता, धीरज , नेहा, रिया गहलोत एवं प्रिया) तृतीय स्थान ग्रुप नम्बर 7(मनीषा कंवर, सोनू बोराणा, उर्मिला गहलोत, पदमा बोराणा एवं हिमांशी कुमावत रही। परिंडा अभियान के तहत जिला कलैक्टर एल एन मंत्री के द्वारा चलाया गया परिंडा अभियान के तहत रुकमा देवी - कॉलेज में छात्रअध्यापकों के द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।

जिला संयोजक सोहन लाल भाटी ने बताया कि परिंडा अभियान का प्रचार-प्रसार को व्यापक छात्रों अध्यापकों के मार्फ़त जन-जन तक परिन्दों के प्रति संवेदनशील जागृत की जा सके। परिंदो के लिये परिंडो अभियान एक बहुत ही पुण्य कार्य है। गर्मी में परिंडो के मार्फ़त पानी की परिन्दों के सुलभ मात्रा में पानी मिलने से परिंदे का शरीर डिहाइड्रे होगा। पर्यावरण में परिंदों को संरक्षण मिलेगा। परिंडा वितरण एवं चार्ट प्रतियोगिता का आयोजन में रुकमा देवी शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय के निदेशक डॉ भूपेंद्र एवं प्रिय मैम का योगदान रहा। कार्यक्रम में परिंदा अभियान के जिला ब्रांड एंबेसडर अर्जुन मेहता, प्रवीण कुमार जांगिड़, कुलदीप पंवार, गुलाब जांगिड़ आदि उपस्थित थे।

दुर्गावाहिनी जोधपुर प्रान्त का शौर्य प्रशिक्षण शुरू

पाली, (नि.सं.)। दुर्गावाहिनी जोधपुर प्रान्त का 7 दिवसीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग आज से पाली शहर के वंदे मातरम छात्रावास में विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ। वर्ग का शुभारंभ मां भारती व माता जगदम्बा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर एवं दीप प्रज्वलन करके किया गया।

उद्घाटन समारोह की मुख्य वक्ता, दुर्गावाहिनी राजस्थान क्षेत्र संयोजिका लता पंड्या ने दुर्गावाहिनी की स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदू समाज की धुरी महिला होती है। उन्होंने कहा कि आज की बेटी कल के परिवार की आधारशिला बनेगी। दुर्गावाहिनी का मुख्य उद्देश्य बेटियों में आत्मगौरव, आत्मरक्षा और आत्म निर्भरता का भाव विकसित करना है। उन्होंने कहा कि बेटियों का आत्मविश्वास सशक्त करने, समाज एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए उन्हें प्रशिक्षित करने तथा आत्मरक्षा के विविध उपायों की जानकारी देने के लिए यह प्रशिक्षण आवश्यक है।

कार्यालय नगर निगम पाली (राज.)
(लालबहादुर शास्त्री टाऊन हॉल, सुरजपोल के पास, पाली, पिनकोड-306401)
टेली-फैक्स:- 02932-221301 ई-मेल :- cmcpali@yahoo.co.in
क्रमांक :- 05 भण्डार/2025/35 दिनांक :- 15.05.2025

ई-निविदा सूचना 2025-26

सर्वसाधारण विशेष रूप से रजिस्टर्ड गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्थाओं,एरिया लेवल फेडरेशन/सिटी लेवल फेडरेशन एव कॉर्पोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी (C.S.R) के अन्तर्गत सहयोग देने वाली कम्पनीज/संस्थाओं (जिन्हे आगे चलकर आवेदनकर्ता/संस्था सम्बोधित किया जायेगा) को सूचित किया जाता है कि वर्तमान मे नगर निगम द्वारा पाली शहर के नगरीय क्षेत्र मे दीनदयाल अन्त्योदय योजना DAY NULM के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर स्थित 4 आश्रय स्थलों का संचालन हेतु तकनीकी एंव वित्तीय प्रस्ताव ऑनलाईन आमंत्रित किये गये है। निविदा मे संबंधित प्रपत्र व जानकारी www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN No DLB2526SSOB04927, DLB2526SSOB04929, DLB2526SSOB04930, DLB2526SSOB04931

आयुक्त
राज.संवाद/सी/25/2580 नगर निगम, पाली

उदयपुर में तेज अंधड़ के साथ बारिश हुई, कई पेड़ धाराशाही, बिजली गुल

लेकसिटी में उमस व गर्मी बरकरार, तापमान 39.4 डिग्री पहुंचा

उदयपुर, (कासं)। लेकसिटी में बढ़ती गर्माहट के बीच सोमवार को दिन में अचानक मौसम पलट गया और तेज अंधड़ सी हवाएं चलने लगी। हालांकि बारिश का रूख पूरे शहर में एक जैसा नहीं रहा, लेकिन शहर में जो हवाएं चली उसमें कई जगहों पर पेड़ों को धाराशाही कर दिया।

उदयपुर शहर में दोपहर करीब तीन बजे अचानक मौसम पलटने लगा और तेज हवाएं चलने लगी हवाओं की तेज रफ्तार के साथ बारिश शुरू हो गई और चंद मिनटों की इस बारिश और हवाओं से जगह-जगह पेड़ धाराशाही हो गए। फतहपुरा से सहेलियों की बाड़ी जाने वाले मार्ग पर तो दर्जनों पेड़ जमींदोज हो गए। वहीं आयड़ मेन रोड़ पर एक विशालकाल पेड़ का एक बड़ा हिस्सा सड़क पर आ गिरा, जिससे यहां यातायात बाधित रहा। वहीं हवाओं के साथ पेड़ व तारों के टूटने से बिजली भी गुल हो गई जो करीब छह घंटों बाद सुचारू हो पाई

उदयपुर में बारिश के साथ आये तेज अंधड़ ने कई पेड़ों को धाराशाही कर दिया।

हालांकि शहर के फतहपुरा, साइफन आदि क्षेत्रों में तो रात आठ बजे तक बिजली सुचारू नहीं हो पाई। शहर के आयड़ व संबंधित क्षेत्र में तो करीब ढाई बजे ही बिजली गुल हो गई जो करीब पांच घंटे बाद 7.30 बजे सुचारू हो पाई।

बताया जा रहा है प्रतापनगर ग्रिड स्टेशन में लगी तारों में आग से शहर के अधिकांश हिस्सों में बिजली बाधित हुई। वहीं कई हिस्सों फतहपुरा, बेदला, साइफन आदि क्षेत्रों में बिजली कटौती के साथ ही हवाओं से गिरे पेड़ों से यहां रात आठ बजे तक भी घरों में बिजली आपूर्ति सुचारू

- शहर के अधिकांश हिस्सों में करीब पांच घंटे बिजली गुल रही

नहीं हो पाई। जगह-जगह पड़े पेड़ों को निगम की टीमों द्वारा हटाने की कवायद की गई। वहीं टूटे तारों को जोड़ने का काम भी विद्युत विभाग की ओर से किया गया। शहर में गर्मी की तपिश बढ़ने के साथ ही अब तापमान में भी बढ़ोतरी हो रही है।

मौसम विभाग डबोक से मिली जानकारी के अनुसार शहर का अधिकतम तापमान 39.4 डिग्री व न्यूनतम तापमान 27.2 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। धूप की तल्खी के साथ ही मौसम में घुली उमस लोगों को परेशान कर रही है। अचानक बदला मौसम भी उमस को कम नहीं कर पाया और बारिश के बाद फिर गर्मी व उमस का अहसास होने लगा।

मनरेगा श्रमिकों को गांवों में नहीं मिल रहा काम

आक्रोशित श्रमिकों ने उपतहसील का घेराव किया, आंदोलन की दी चेतावनी

श्रीगंगनागर, (निसं)। यहां बींझबायला इलाके में मनरेगा के तहत गांवों में लंबे समय से काम नहीं मिलने और मिलने वाले कार्यस्थलों की गांवों से अधिक दूरी से परेशान श्रमिकों ने विरोध प्रदर्शन किया। श्रमिकों ने बींझबायला उपतहसील कार्यालय का घेराव किया। क्षेत्र के कई गांवों से आए सैकड़ों मनरेगा श्रमिकों ने उपतहसील कार्यालय के बाहर धरना दिया और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए मनरेगा के तहत रोजगार की मांग की। धरने में जीवनदेसर, 34 एलएनपी, 39 एलएनपी, हरखेवाला, 58 एलएनपी और साजनवाला गांवों के मनरेगा श्रमिक शामिल हुए। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी भाग लेते हुए मनरेगा के तहत रोजगार की मांग की।

श्रमिकों का कहना है कि पिछले कई महीनों से उन्हें मनरेगा के तहत कोई काम नहीं मिल रहा है। जिन गांवों में कार्य स्वीकृत हो भी रहे हैं, वे इतनी अधिक दूरी पर हैं कि वहा रोजाना जाना संभव नहीं है। इससे ग्रामीणों के सामने रोजगार और जीविका का गंभीर संकट खड़ा हो गया है। श्रमिकों ने बताया कि उन्होंने कई बार ग्राम पंचायतों व संबंधित अधिकारियों को अपनी समस्याएं बताई, लेकिन अब तक कोई ठोस समाधान नहीं हुआ। इसी के विरोध में वे आज एकजुट होकर धरने पर बैठे हैं। धरने के दौरान श्रमिकों ने प्रशासन के खिलाफ जमकर नारे लगाए और चेतावनी दी कि अगर जल्द से जल्द उन्हें गांवों में ही काम नहीं दिया गया तो वे उग्र आंदोलन करेंगे। श्रमिकों ने कहा कि अगली बार बींझबायला उपतहसील को तालाबंदी कर ठप कर दिया जाएगा। धरना स्थल पर पहुंचे उपतहसील प्रशासन के अधिकारियों ने श्रमिकों से वार्ता कर उनकी मांगों को उच्चाधिकारियों तक पहुंचाने का आश्वासन दिया। हालांकि प्रदर्शनकारी श्रमिक तब तक धरने पर डटे रहे जब तक उन्हें कोई लिखित समाधान नहीं दिया गया।

व्यापारी का कर्मचारी ही लूट का मास्टर माइंड निकला

झुंझुनूं, (निसं)। जिले के बिसाऊ थाना क्षेत्र में बिसाऊ कस्बे से महनसर जाने वाली रोड पर छह मई को सुबह हुई लूट की वारदात का पुलिस ने राजफाश कर दिया है। यह लूट की कहानी पूरी नकली थी जो परिवादी था, वो ही लूट का मास्टरमाइंड निकला।

रामगढ़ शेखावाटी के अनाज व्यापारी श्रवण सिंह भवानी सिंह की दुकान पर काम करने वाला रामगढ़ शेखावाटी निवासी वाहिद चार साल से व्यापारी के यहां काम करता था, जो पैसों को लाने और ले जाने का काम भी करता था। छह मई को भी झुंझुनूं से 15 लाख रूपए लाने के लिए वाहिद आया था। उसने बिसाऊ में आकर एक लाख रूपए ई-मित्र पर जमा करवाए और 14 लाख रूपए लेकर स्कूटी से रामगढ़ के लिए रवाना हुआ। उसने पुलिस को बताया कि महनसर के पास दो बाइक सवारों ने आकर उसके साथ पिस्तौल की नोक पर स्कूटी और मोबाइल लूट लिया। स्कूटी की डिग्गी में 14 लाख रूपए थे। पुलिस को घटना स्थल से कुछ दूरी पर स्कूटी और मोबाइल मिला। लेकिन पैसे नहीं मिले। पुलिस ने इस मामले में तफ्तीश शुरू की तो कुछ संदिग्ध मोबाइल नंबर मिले। इस दौरान सामने आया कि जयपुर ग्रामीण जिले के जोबनेर थाना इलाके के हिंगोनिया निवासी अयान पठान और

बिसाऊ थाना पुलिस ने लूट की वारदात का राजफाश किया।

उसका ही पड़ौसी ताहिर पठान, घटना के एक-दो दिन पहले से रामगढ़, बिसाऊ आदि इलाके में आए थे। पुलिस ने अयान से पूछताछ की तो उसने जुर्म करना कबूल लिया और पूरी कहानी बताई तो पुलिस के भी होश उड़ गए।

अयान ने पुलिस को बताया कि इस पूरी लूट की कहानी का मास्टर माइंड खुद परिवादी वाहिद है। जिसने ताहिर पठान से संपर्क किया। ताहिर पठान ने बताया कि इस लूट की झूठी वारदात के लिए दो लाख रूपए मिलेंगे। घटना के दिन भी वाहिद 12 लाख रूपए पहले ही ठिकाने लगा आया था। स्कूटी की डिग्गी में सिर्फ दो लाख रूपए थे, जो वे लेकर आ गए। पुलिस ने इस मामले में परिवादी और अनाज व्यापारी के कर्मचारी वाहिद के साथ-साथ अयान को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं ताहिर की तलाश की जा रही है, जो फरार है। पुलिस ने वाहिद के घर से 12 लाख रूपए भी बरामद कर लिए है। बताया जा रहा है कि वाहिद की कुछ माह पहले ही शादी थी। शादी में उसके कर्ज हो गया। इसी कर्ज को चुकाने के लिए उसने लूट की झूठी कहानी तैयार कर दो लाख रूपए में किराए के लुटेरे बुलाए। पुलिस और व्यापारी को शक ना हो, इसके लिए ना तो वो कहीं भागा और जब भी उसे पूछताछ के लिए बुलाया जाता। वो समय पर पहुंच जाता।

कार्यवाहक एसपी देवेंद्र सिंह राजावत ने बताया कि मामले का राजफाश करने वाली टीम को पुरस्कृत किया जाएगा।

छात्राओं ने गोचर की भूमि में खुद बनाई क्रिकेट की पिच

बीकानेर, (निसं)। ढींगसरी के बाद अब बीकानेर के बादनूं गांव की बेटियों ने साबित कर दिया है कि अगर जज्बा हो तो संसाधनों की कमी भी रास्ता नहीं रोक सकती। महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, बादनूं की 30 छात्राएं हर दिन सुबह-शाम क्रिकेट की प्रैक्टिस करती हैं।

कोच राकेश कुमार गोदारा की देखरेख में बच्चियां खेलती हैं, अपनी पिच खुद तैयार करती हैं और गांव की गोचर भूमि पर अभ्यास करती हैं। हालांकि, संसाधनों की कमी है, लेकिन आत्मविश्वास और मेहनत की कोई कमी नहीं है। इसी का नतीजा है कि पिछले दो वर्ष में छात्राओं ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में गोल्ड और ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किए हैं। वर्ष 2024 में अंडर-17 और अंडर-19 की नेशनल प्रतियोगिताओं में भी इनका चयन हुआ, जिसमें संगीता घिंटाला ने कांस्य पदक जीता। बादनूं स्कूल की

- 30 छात्राएं हर दिन सुबह-शाम क्रिकेट की प्रैक्टिस करती हैं

क्रिकेट टीम राजस्थान रॉयल्स द्वारा आयोजित अंडर-19 स्कूल टूर्नामेंट की विजेता रही है। इसके बाद इन छात्राओं को क्रिकेटर राहुल द्रविड से मिलने का अवसर भी मिला। यह मुलाकात न केवल गर्व का क्षण थी, बल्कि आने वाली खिलाडियों को भी नई प्रेरणा देने वाली थी।

स्कूल की मनीषा घिंटाला, सरिता घिंटाला, कंचन प्रजापत, केलम सोनी और संगीता घिंटाला वर्ष 2024 में स्कूल टूर्नामेंट में नेशनल विजेता रह चुकी हैं। इन सभी को राजस्थान क्रिकेट संघ (आरसीए) की ओर से एक-एक लाख रुपए का पुरस्कार भी मिला। अंडर-15 और अंडर-19 वर्ग में जिले से लेकर राज्य स्तर तक बादनूं की छात्राएं शानदार प्रदर्शन कर रही हैं। कोच राकेश कुमार गोदारा पिछले दो सालों से बच्चियों को नियमित प्रशिक्षण दे रहे हैं। संसाधनों की कमी के बावजूद वह उन्हें सही तकनीक और धैर्य से खेलना सिखा रहे हैं। उन्होंने गोचर भूमि पर पिच बनाने में मदद की। बल्लों पर प्लास्टिक की बोतलों के कवर लगाकर क्रिकेट खेलना शुरु करने वाली ये बच्चियां अब 110 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद फेंक रही हैं।

राजस्थान एडहॉक कमेटी के सदस्य रतन सिंह शेखावत ने बताया कि बादनूं गांव की ये बेटियां राजस्थान के खेल नक्शे पर एक नई पहचान बना रही हैं। इनकी सफलता को देशभर के दूसरे खिलाड़ियों और कोचों को देखना चाहिए और उनसे सीख लेनी चाहिए कि मेहनत से बड़ी कोई चीज नहीं होती। इन बेटियों की जीत हम सबकी जीत है।

भीलवाड़ा में भीषण गर्मी और लू का प्रकोप जारी

भीलवाड़ा, (निसं)। औद्योगिक नगरी में भीषण गर्मी और लू का प्रकोप इतना अधिक बढ़ गया है कि दिन के समय सड़कें सुनसान हो गई है, मानो कर्फ्यू जैसा माहौल बन गया हो। तापमान 39 डिग्री के पार पहुंचने के कारण लोग घरों में दुबके हुए हैं और केवल आवश्यक कार्यों के लिए ही बाहर निकल रहे हैं।

भीलवाड़ा में वर्तमान में तापमान दिन में 38-41, रात में भी 30-32 से नीचे नहीं गिर रहा। लू का इतना असर है कि धूप में निकलना मुश्किल हो गया है। पारा लगातार खतरनाक स्तर पर जाने से सड़कों पर सन्नाटा पसरा हुआ है। दोपहर में बाज़ार और सड़कें खाली, जैसे कर्फ्यू लगा हो। पानी और बिजली की समस्या भी आमजन के लिए कोड में खुजली का काम कर रही है। शहर के कई इलाकों में पानी की किल्लत और लंबे बिजली कटौती से लोग परेशान हैं। भीषण गर्मी से श्रमिकों और किसानों की मुश्किलें भी बढ़ी है। मजदूरों का काम रुका हुआ है तो किसानों का खेतों में काम करना मुश्किल हो गया है।

पीएमओ डॉ. अरुण गौड़ ने बताया कि लू लगने, डिहाइड्रेशन और हीट स्ट्रोक के मामले बढ़े हैं। जिले के सबसे बड़े एमजी हॉस्पिटल में ओपीडी की संख्या और मरीजों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हुई है। सरकार और स्थानीय प्रशासन ने हीटवेव अलर्ट जारी कर लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। वहीं कई सामाजिक संगठन और प्रशासन ने शहर में कई स्थानों पर शीतल भंडार और पेयजल की व्यवस्था की है। पीएमओ डॉ. गौड़ ने बताया कि भीषण गर्मी को देखते हुए दोपहर 12 से 4 बजे तक बाहर न निकलें। खूब पानी पिएं, नारियल पानी और ओआरएस का उपयोग करें। सिर ढककर रखें, हल्के कपड़े पहनें और बुजुर्गों या बच्चों का खास ख्याल रखें। भीलवाड़ा की यह स्थिति पूरे राजस्थान में चल रही भीषण गर्मी का हिस्सा है।

केबल चोरी करने का आरोपी गिफ्तार

सांभरझील, (निसं)। मोखमपुरा पुलिस ने विद्युत पोलों से केवल काटकर चोरी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। चोरी के काम में ली गई गाड़ी को भी जब्त कर लिया।

पंचशील कॉलोनी ग्राम महला में स्किम जॉयमैक्स गार्डन में 27 जनवरी की रात्रि को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा विद्युत पोलों से केबल काटकर चोरी करने के संबंध में रिपोर्ट दर्ज करवाई गई थी। थानाधिकारी मौखपुरा संजय प्रसाद मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम को सफलता मिली। पुलिस की ओर से अभियुक्त व वाहन को चिन्हित किया गया। दबिश देकर आरोपी को डिटेन कर पूछताछ की तो वारदात करना कबूल किया। चोरी की गई विद्युत केबिल बरामद की। पुलिस की ओर से अन्य फरार आरोपियों की तलाश करना बताया जा है। शेष माल की बरामदगी के लिए प्रयासरत है। आरोपी कमलेश उर्फ कमल को थाना कालवाड जयपुर शहर का हिस्ट्रीशीटर बताया जा रहा है। पुलिस थाना हरमाड़ा, कालवाड़, करधनी, सेज, रींगस, जोबनेर, दौलतपुरा, बगरू में लूट, आर्म्स, हत्या का प्रयास, मारपीट व चोरी के करीब 20 प्रकरण दर्ज होना पुलिस की ओर से बताया गया है।

कुओं पर लगी मोटरों के तार चोरी : निवाई के बरोनी थानांतर्गत गांव दादिया की ढाणी में कुओं पर लगी हुई मोटरों के तार काट ले गए। इस बाबत पीड़ित किसानों ने चोरी का मामला दर्ज करने के लिए थाने में अर्जी लगाई है। किसान छीतरमल, रामनारायण, ग्यारसीलाल व कजोड़ गुर्जर ने पुलिस थाने में दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि ढाणी के खेतों कुओं पर लगे हुए श्री फेस मोटरों के कॉपर वायर जिनकी लंबाई करीब 400 मीटर है। अज्ञात चोर रात्रि में अंधेरे का फायदा उठाते हुए वायर काटकर चुरा ले गए।

ठगी के आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। जिले में साइबर ठगों के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई करते हुए टीपर गैंग के सरगना सोनू मीणा समेत चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है, आरोपियों के पास से दो लग्जरी गाड़ियां, 10 एंड्रॉयड मोबाइल, 9 चेक बुक और 2 बैंक पासबुक जब्त की गई हैं। ये गैंग ऑनलाइन गेम और टिपिंग के नाम पर लोगों से ठगी करता था। साइबर सेल की विशेष टीम गठित की गई, टीम को सूचना मिली कि गैंग के सदस्य दो लग्जरी गाड़ियों में टोंक की ओर आ रहे हैं, जिस पर टीम ने पचाला चौकी के पास नाकाबंदी की और दो लग्जरी गाड़ियों को रोककर तलाशी ली गई। गाड़ियों में बैठे चारों युवक सोनू मीणा, आकाश मीणा, शिवम उर्फ पिंटू मीणा और विक्रम मीणा समस्त निवासी पाटोली थाना अलीगढ़ से तलाशी में मोबाइल और बैंक दस्तावेज मिले। मोबाइल में ठगी में इस्तेमाल एप, टेलीग्राम और व्हाट्सएप के जरिए सैकड़ों लोगों से ठगी के सबूत मिले।

ब्यावर में अमूल, कृष्णा, सरस का मिलावटी घी पकड़ा

सूने मकान में मिलावटी घी व मिलावटी तेल के कारोबार की पैकिंग की जाने की शिकायत पर छापा मारा

ब्यावर, (निसं)। ब्यावर में अमूल, कृष्णा, सरस का मिलावटी घी पकड़ने की कार्रवाई की गई। सुनसान मकान में मिलावटी घी व मिलावटी तेल के कारोबार की पैकिंग की जाने की शिकायत पर छापा मारा गया।

जानकारी के अनुसार चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग राजस्थान सरकार की महत्वकांशी योजना "शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान" के तहत जिला कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खडगावत एवं अति. जिला कलेक्टर मोहनलाल खटनावलिया के निर्देशानुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजय गहलोत के नेतृत्व में गठित खाद्य

- गोदाम के अन्दर पैकिंग मैटीरियल पाया गया जिसे सील किया गया

सुरक्षा टीम द्वारा मुखबिरी के आधार पर जशोदा नगर कृषी मंडी के पास सुनसान मकान में मिलावटी घी व मिलावटी तेल के कारोबार की पैकिंग की जाने की शिकायत के आधार पर पर कार्रवाई की गई। आसपास पड़ौसी द्वारा दिये गये फोन नम्बर पर सम्पर्क किया गया लेकिन फोन बन्द कर दिया गया। मालिक का चार से पांच घंटे तक इंतजार किया गया लेकिन यहां पर कोई नहीं पहुंचा। दरवाजे के अन्दर से देखने पर पैकिंग मैटीरियल पाया गया जिसमे खुर्द-बुर्द का सन्देह होने पर गोदाम का ताला नायब तहसीलदार व थानाधिकारी साकेत नगर की मौजूदगी में ताला तोड़ा गया। गोदाम के अन्दर अमूल, कृष्णा, सरस, स्वास्तिक, मूंगफली तेल, सुपर पोस्टमेन का पैकिंग मैटीरियल पाया गया जिसको मौके पर ही सभी की मौजूदगी में सील किया गया। जांच दल में खाद्य सुरक्षा अधिकारी नारायण सिंह, जितेन्द्र सिंह सीआई पुलिस थाना, नायब तहसीलदार राजेन्द्र सिंह राणा, भुपेन्द्र सिंह, लोकेश कुमार, अजय सिंह, शिवराम साकेत नगर मय पुलिस जाब्ता द्वारा कार्रवाई की गई।

युवक पानी की टंकी पर चढ़ा, आत्महत्या की धमकी दी

पत्नी को वापस लाने की मांग को लेकर टंकी पर चढ़ा था युवक

अलवर, (निसं)। अलवर जिले के रैणी कस्बे में एक युवक द्वारा जलदाय विभाग की पानी की टंकी पर चढ़कर आत्महत्या की धमकी देने से हड़कंप मच गया। युवक की पहचान बंबू मीणा के रूप में हुई है, जो पत्नी को वापस लाने की मांग को लेकर टंकी पर चढ़ा था। करीब एक घंटे तक चला यह ड्रामा कस्बे में चर्चा का विषय बन गया।

बंबू मीणा का आरोप है कि उसकी पत्नी को एक रिश्तेदार जबरदस्ती अपने साथ ले गया है और वह उसे वापस लाना चाहता है। युवक ने दावा किया कि उसने इस मामले में कई बार पुलिस से गुहार लगाई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इससे नाराज होकर वह जलदाय विभाग की टंकी पर चढ़ गया और पत्नी को वापस लाने तक नीचे न उतरने की चेतावनी दी। घटना की जानकारी मिलते ही प्रशासन और पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। मौके पर रैणी स्छरू हरकेश मीणा, तहसीलदार कैलाश मेहरा, थानाधिकारी रामजीलाल मीणा सहित पुलिस जाब्ता और पीएचईडी के सहायक अभियंता पहुंचे। अधिकारियों ने काफी देर तक युवक को समझाया और आश्वासन दिया कि मामले में उचित कार्रवाई की जाएगी। करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद युवक टंकी से नीचे उतरा, जिसके बाद राहत की सांस ली गई। प्रशासन का कहना है कि युवक की शिकायत की जांच की जाएगी और आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

बस में डोडा-पोस्त की तस्करी, चालक सहित दो गिरफ्तार

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के सांचौर पुलिस ने सोमवार को गोरसिया बस में पार्सल की आड में अवैध मादक पदार्थ तस्करी करते हुए बस चालक व परिचालक को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 17.375 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त बरामद किया। अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त परिवहन में प्रयुक्त बस को भी जब्त किया है।

जालोर पुलिस अधीक्षक ज्ञानचन्द्र यादव के निर्देशानुसार जिले में मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई के लिए चलाये जा रहे अभियान के तहत संदिग्ध स्थानों एवं वाहनों की सघन तलाशी ली जाकर कार्रवाई करने के क्रम में जिला पुलिस द्वारा लगातार कार्रवाईयां की जा रही है। इसी क्रम में सांचौर थानाधिकारी देवेन्द्रसिंह के निकट निर्देशन में पुलिस टीम का गठन किया गया।

अमृतलाल उपनिरीक्षक पुलिस थाना सांचौर के नेतृत्व में पुलिस टीम ने 18 मई को मुखबिर से प्राप्त सूचना अनुसार थाना के सामने नाकाबंदी कर गोरसिया बस को रूकवाया जाकर

सांचौर पुलिस ने डोडा-पोस्त तस्करी के मामले में दो जनों को पकड़ा।

सघन तलाशी ली गई तो वाहन में 17.375 किलोग्राम डोडा-पोस्त भरा हुआ पाया गया।

डोडा-पोस्त बरामद कर बस को जब्त किया गया। बस चालक डालुराम पुत्र जोराराम जाट निवासी फगलु का तला पुलिस थाना धनाऊ जिला बाड़मेर व परिचालक भगाराम पुत्र हनुमानाराम जाट निवासी दुधु पुलिस थाना धोरीमन्ना जिला बाड़मेर को गिरफ्तार किया। आरोपियों से अनुसंधान शुरू किया गया है।

12 सड़कों के निर्माण कार्य में घटिया सामग्री के उपयोग का मामला सामने आया

बोरावड़, (निसं)। नगर पालिका बोरावड़ द्वारा स्वीकृत 12 सड़कों के निर्माण कार्य में घटिया सामग्री के उपयोग और नियमों की खुलेआम अवहेलना का मामला सामने आया है। इस संबंध में बोथरा बास निवासी समाजसेवी राजेन्द्र खर्रा ने उपखंड अधिकारी मकराना व जिला कलेक्टर डीडवाना-कुचामन को लिखित शिकायत सौंपी है। शिकायत में निर्माण कार्य में हो रहे भ्रष्टाचार की विस्तृत जानकारी देते हुए थर्ड पार्टी जांच एवं दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की गई है।

राजेन्द्र खर्रा के अनुसार 12 मार्च 2025 को स्वीकृत इन सड़कों का निर्माण कार्य वर्तमान में बोरावड़ नगर में जारी है, जिसमें ठेकेदार द्वारा बजरी की जगह क्रशर वेस्टेज और कच्चे पत्थरों का उपयोग किया जा रहा है। इसके साथ ही सीमेंट का अनुपात जी सिड्यूल के मानकों के अनुसार न होकर मात्र एक बैग सीमेंट प्रति 200 तगारी कंक्रीट में उपयोग किया जा रहा है, जो निर्माण की गुणवत्ता को संदेहास्पद बनाता है। उन्होंने बताया कि

बोरावड़ नगरपालिका क्षेत्र में सड़कों के निर्माण कार्य में घटिया सामग्री के उपयोग और नियमों की खुलेआम अवहेलना का मामला सामने आया।

- समाजसेवी ने उपखंड अधिकारी मकराना व कलेक्टर डीडवाना-कुचामन को शिकायत सौंपी
- समस्त निर्माण कार्यों की पीडब्ल्यूडी से थर्ड पार्टी जांच करवाने, निर्माण सामग्री की सैंपल जांच कराने की मांग की

रानाबाई टेंट हाउस से देवाराम मुरावतिया के मकान तक निर्माणाधीन सड़क में मानक रोलर का उपयोग नहीं किया गया, जिससे कॉलोनीवासियों ने विरोध करते हुए निर्माण कार्य रुकवा दिया। इसके बाद नगर पालिका के जेईएन ने मौके पर पहुंचकर औपचारिकता निभाने हेतु हल्के रोलर से कार्य किया, जो लीपापोती से अधिक कुछ नहीं है।

शिकायत में यह भी उल्लेख किया गया है कि कुछ स्थानों पर नई सड़कें पुराने लेवल से अधिक ऊंची बना दी गई हैं, जिससे वर्षा के समय घरों में पानी भरने का खतरा उत्पन्न हो गया है। इस स्थिति से आमजन में नाराजगी व्याप्त है। राजेन्द्र खर्रा ने मांग की है कि समस्त निर्माण कार्यों की पीडब्ल्यूडी से थर्ड पार्टी जांच करवाई जाए, निर्माण सामग्री की सैंपल जांच कराई जाए और दोषी अधिकारियों व ठेकेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही जब तक जांच पूरी न हो, संबंधित ठेकेदारों का भुगतान रोका जाए।

उन्होंने जिला कलेक्टर के साथ-साथ भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो को भी शिकायत की प्रतिलिपि प्रेषित की है। उपखंड अधिकारी ने इस मामले की जांच का जिम्मा नगर पालिका की सहायक अभियंता विनीता को सौंपा है।

कार्लोस अल्कराज रविवार को इटालियन ओपन के फाइनल में जैनिक सिनर को 7-6 (7/5), 6-1 से हराकर खिताब अपने नाम किया। उनका यह इस सीजन का तीसरा खिताब है।

पिछली बार भी अल्कराज ने ही चाइना ओपन के फाइनल में हराया था।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

शिवम शुक्ला

पॉवेल की जगह मप्र के शिवम शुक्ला को 30 लाख रुपए में कोलकाता की टीम में शामिल किया गया है। जबकि बेंगलुरु ने एनगिडी की जगह जिम्बाब्वे के मुख्य तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजरबानी को 75 लाख रुपए में अपने साथ जोड़ा है। मुजरबानी 26 मई के बाद के मैचों में खेलते नजर आएंगे। में लीग स्टेज के 60 मैच खत्म हो चुके हैं, 10 मुकाबले बचे हैं और 3 टीमों ने प्लेऑफ में जगह बना ली है। रविवार को पंजाब किंग्स और गुजरात टाइटंस ने अपने-अपने मुकाबले जीते। दोनों 17-17 अंक के साथ प्लेऑफ में पहुंच चुकी हैं।

क्या आप जानते हैं ?... आईपीएल इतिहास में, राजस्थान रॉयल्स और पंजाब किंग्स के बीच 28 बार भिड़ंत हुई है। राजस्थान रॉयल्स ने 16 जीत के साथ बढ़त हासिल की है, जबकि पंजाब किंग्स ने 12 मैचों में जीत हासिल की है।

एडहॉक कमेटी के सदस्य खेलमंत्री के इशारों पर काम कर रहे हैं, खेलमंत्री राज्यवर्धन सिंह मुझे बदनाम करने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं : जयदीप बिहाणी

जयपुर, 19 मई। एडहॉक कमेटी के कन्वीनर जयदीप बिहाणीने खेलमंत्री राज्यवर्धन सिंह पर आरोप लगाते हुए कहा कि जिस एडहॉक कमेटी ने आज मीटिंग कर मुझ पर आरोप लगाया, उन्हें देखते हुए ही सहजता का पता लगाया जा सकता है कि इन सबके पीछे कौन व्यक्ति है। मीटिंग में शामिल एडहॉक कमेटी के सदस्य हरीशचंद्र सिंह ने मुझे फोन करके बताया कि खेलमंत्री के पीए ने मीटिंग में जाने के लिए फोन किया था। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि ये कौन कर रहा है। लेकिन जब मुझ पर सीधे आरोप हैं तो लड़ाई भी खुली ही होगी। हर फ़र्ज़वाड़े का जवाब देना चाहता हूँ। मुझ पर किसी का दबाव नहीं है, जो है वो अब सबके सामने रखूंगा।

बिहाणी ने खेलमंत्री राज्यवर्धन सिंह पर जातिवाद का आरोप लगाते हुए कहा कि एडहॉक कमेटी में 6 सदस्यों में से 4 सदस्य एक ही जाति के क्यों हैं?

बिहाणी नेआरसीएएडहॉक कमेटी (तदर्थ समिति) के सदस्य धनंजय सिंह को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि धनंजय सिंह खुद जोधपुर क्रिकेट संघ का खुद को अध्यक्ष बता रहे हैं। नागौर क्रिकेट संघ ने इस्तीफा नहीं दिया और जोधपुर से चुनाव लड़ लिया। जो व्यक्ति खुद गलत तरीके से एक जिला क्रिकेट संघ का अध्यक्ष बना है, उस पर तो खुद चुनाव में धांधली करने का आरोप लगाया जा रहा है।

आरसीएएडहॉक कमेटी के सदस्य जयदीप बिहाणी ने आरोप लगाया कि बैठक में उपस्थित धर्मवीर सिंह और रतन सिंह पर तो जांच जारी हैं। धर्मवीर सिंह ने गलत तरीके से पाली में चुनाव लड़ा।

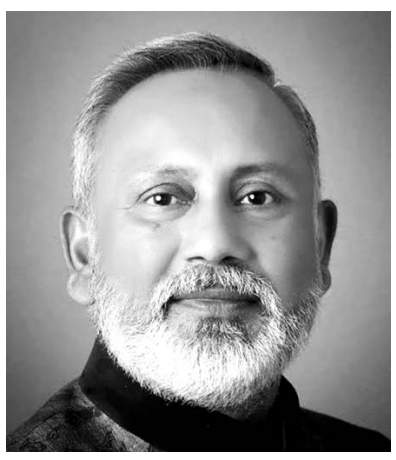

इसके अलावा उनके खिलाफ 5 लाख रुपए को लेकर लिखित याचिका आई है। जिसमें खिलाड़ियों के खाने के ठेकेदार से प्रति खिलाड़ी के 50 रुपए बढ़ाने को लेकर 5 लाख रूपये तय हुआ था, ओर धर्मवीर सिंह ने 28.4.2025 को फोन करके कहा कि मैं जिसको रुपए देने को कहूं उसे 5 लाख रुपए दे देना।

यही वजह है कि अनर्गल आरोप लगाए जा रहे हैं। खुद फंस रहे हैं, इसलिए खुद को बचाने के लिए ये सब नौटंकी कर रहे हैं।

बिहाणी ने कहा कि नाममात्र के सहयोगियों को सिर्फ खुद का अधिकार है। इसके अलावा मीटिंग के लिए 7 दिन का नोटिस देना होता है। फिर आज की बैठक की कानूनी वैधता क्या है? उन्होंने कहा कि धर्मवीर सिंह का आरोप है किआरसीएएडहॉक कमेटी का काम सिर्फ चुनाव कराना है। अगर ऐसा है तो साल भर से जो क्रिकेट टूर्नामेंट कमेटी ने बैठक की, उनमें धर्मवीर सिंह ने सहमति क्यों दी?

आरसीए एडहॉक सदस्य होने के नाते मुझ पर आरोप लगाए जा रहे हैं, ये ही व्यक्ति पहले आरसीए के पूर्व अध्यक्ष वैभव के साथ फोटो खिंचवाते दिखाई दिए थे।

बिहाणी ने बताया किएडहॉक कमेटी के कन्वीनर होने के नातेएडहॉक कमेटी की बैठक 25 मई को के. एल.सैनी स्टेडियम में आयोजित की है। जयदीप बिहाणी ने कहा कि मैं एडहॉक कमेटी का कन्वीनर हूं लेकिन मैं नेता भी हूं और पार्टी का कार्यकर्ता भी हूं। मेरे और भी कई काम होते हैं। विधानसभा भी अटेंड करना होता है। अभी प्रधानमंत्री आ रहे हैं इसलिए मैंने 25 मई को मीटिंग का निर्णय लिया है।

आरसीए एडहॉक कमेटी विवादों के मकड़जान में फंसी

आरसीए एडहॉक कमेटी 4 सदस्यों के कन्वीनर बिहाणी पर लगाए गंभीर आरोप

जयपुर, 19 मई। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की एडहॉक कमेटी में सियासी विवाद लगातार बढ़ता जा रहा है। बीजेपी विधायक और एडहॉक कमेटी के कन्वीनर जयदीप बिहाणी के खिलाफ एडहॉक कमेटी के सदस्यों ने ही मोर्चा खोल दिया है। हेल्थ मिनिस्टर गजेंद्र सिंह खींवसर के बेटे और एडहॉक कमेटी के सदस्य धनंजय सिंह खींवसर ने कहा कि जयदीप बिहाणी के अमर्यादित व्यवहार और अनर्गल बयानों से हम सभी एडहॉक सदस्य स्तब्ध हैं।

धनंजय सिंह ने कहा कि जयदीप बिहाणी ने तानाशाह की तरह काम किया है। जैसे तालिबान अफगानिस्तान को चलाता है, वैसे उन्होंने एडहॉक कमेटी को चलाया है। जब कभी एडहॉक कमेटी की मीटिंग होती थी उसमें भी वह खुद की मनमर्जी करते थे। खींवसर ने कहा कि जयदीप बिहाणी सिर्फ अपनी राजनीतिक रोटियां सीखने के लिए इस तरह के बेतुकेएवं बेवजह विवाद पैदा करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि बिहानी प्रदेश के अछूतों के क्रिकेट संघों के हितों को भी डरा-धमका रहे हैं। ताकि उनकी कोई आवाज न उठे। उन्होंने कहा कि क्रिकेट के नाम पर बिहानीआरसीएएडहॉक कमेटी में अपनी राजनीतिक रोटियां सेक रहे हैं।

दोपहर 1 बजे जयपुर के एसएमएस स्टेडियम की खेल अकादमी में तदर्थ समिति की बैठक बुलाई गई। तदर्थ समिति के 6 में से 4 सदस्यों ने नीचे दिए गए प्रस्तावों को पारित करने पर सहमति जताई।

प्रस्ताव में तदर्थ समिति के संयोजकजयदीप बिहाणी द्वारा व्यक्तिगत रूप से विभिन्न प्राधिकरणों, खेल संघों, रजिस्ट्रार सहकारी समितियों, रजिस्ट्रार सहकारी समितियों आदि को पत्र लिखकर लिए गए निर्णय तदर्थ समिति और उसके सदस्यों की जानकारी और सहमति के बिना हैं।साथ ही, ऐसे निर्णयों पर समिति की सहमति और अनुमोदन नहीं होता है और इसलिए ये सभी पत्र, आदेश, निर्देश कानून के अधिकार के बिना हैं और इन्हें वापस लिया जाता है।

इसके अलावा संयोजकजयदीप बिहाणी द्वारा जिन सभी अधिकारियों को ऐसे पत्र, आदेश, निर्देश लिखे गए हैं, उन्हें निरस्त किया जाएगा ताकि राजस्थान राज्य में क्रिकेट के प्रशासन और अन्य कोई जटिलता उत्पन्न न हो।

समिति द्वारा लिया गया कोई भी निर्णय सभी सदस्यों की सहमति से या बहुमत से लिया जाना चाहिए तथा संयोजक सहित कोई भी व्यक्तिगत सदस्य राजस्थान क्रिकेट संघ के कामकाज के संबंध में कोई भी निर्णय लेने के लिए अधिकृत नहीं है। समिति की बैठक प्रत्येक तीन सप्ताह में एक बार होगी तथा सभी सदस्यों के लिए ऐसी बैठक में उपस्थित होना अनिवार्य होगा, ताकि राजस्थान राज्य में क्रिकेट के प्रशासन के संबंध में नियमित आधार पर निर्णय लिए जा सकें। तदर्थ समिति के संयोजक जयदीप बिहाणी के कार्यों की निंदा की जाती है तथा समिति द्वारा यह निर्णय लिया जाता है कि बिहाणी को सूचित किया जाना चाहिए कि उन्हें सभी सदस्यों की सहमति के बिना तथा बहुमत की राय लिए बिना व्यक्तिगत रूप से कोई भी निर्णय लेने से बचना चाहिए।

आरसीए एडहॉक कमेटी के बिखराव की असली वजह कई जिला संघों को आय एवं व्यय के हिसाब का नोटिस जारी करना रहा

जयपुर , 19 मई। कुछ दिनों पहले डीसीए पाली के सचिव धर्मवीर सिंह को नोटिस जारी किया गया था। नोटिस में वित्तीय अनियमितताओं और चुनाव प्रक्रिया में गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए नोटिस दिया और जरूरी दस्तावेजों के साथ रिकॉर्ड मांगा गया था। इस पर धर्मवीर सिंह ने एक दिन पहले ही नोटिस का जवाब देते हुए बताया था- आरसीए कन्वीनर की ओर से डीसीए पाली से वर्ष 2005 से आय-व्यय का ब्योरा मांगा गया, जबकि पाली में डीसीए का रजिस्ट्रेशन ही वर्ष 2008 में हुआ। ऐसे में वर्ष 2005 से जो सूचना मांगी गई वह किस आधार पर दी जा सकती है? इसके साथ ही जिला क्रिकेट संघ पाली, जोधपुर और बीकानेर ने लिखित में राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद से शिकायत भी की थी। इसमें बताया कि समिति के कन्वीनर जयदीप बिहाणी पिछले 2 महीने से नोटिस देने का ही काम कर रहे हैं। बिहाणी ने मौजूदा क्रिकेट संचालन कमेटी को भंग कर सभी सिलेक्टर्स को कार्य मुक्त कर दिया था। बिहाणी के इस फैसले को लेकर कोई मीटिंग भी नहीं हुई थी, जिसके बाद एडहॉक कमेटी के दूसरे सदस्यों ने इसका विरोध किया था।

5वीं राजस्थान पुरुष फुटबाल लीग

जयपुर एलीट फुटबाल क्लब ने जयपुर राइजिंग फुटबाल क्लब को 12/1 से रौंदा

जयपुर , 19 मई। जेरथी फुटबॉल क्लब सीकर ग्राउंड, रॉयल क्लब जयपुर, ओर जावर उदयपुर, में होम अवे मैच खेले गए । राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव श्री दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि आज के दिन 4 मैच खेले गए । आज तक लीग के 87 मैच खेले जा चुके हैं।

प्रथम मैच :- जयपुर एलीट फुटबाल क्लब और राइजिंग जयपुर फुटबाल क्लब के बीच खेला गया जयपुर एलीट फुटबाल क्लब ने मैच 12/1 से जीत हासिल की।जिसमें जयपुर एलीट फुटबॉल क्लब की ओर से छ गोल महीपत, दो गोल अनुराग ओर दो अमन त्यागी, एक एक गोल जीवेश ओर लक्ष्य ने किए ओर जयपुर राइजिंग फुटबॉल क्लब की ओर से एक गोल आदित्य, ने किया ।

दूसरा मैच :- जेरथी फुटबाल क्लब और सिटी वाल्स फुटबाल क्लब के बीच खेला गया मैच जेरथी फुटबाल क्लब ने 3/0 से जीत हासिल की।

तीसरा मैच :- ए एस एल फुटबाल क्लब और रीयल फुटबाल क्लब के बीच खेला गया मैच ए एस एल फुटबाल क्लब ने 1/0 से जीत हासिल की एक गोल विजय, ने 35 मिनट पर किया।

मैच :- जिंक फुटबाल अकादमी और सनराइज फुटबाल क्लब के बीच खेला गया। जिसमें जिंक अकादमी 4/0 से विजेता रहा । जिंक अकादमी की ओर से पहला गोल करण, ने 8 मिनट दूसरा ओर तीसरा गोल आशीष, ने 60,83 मिनट ओर चौथा गोल सुभाष, ने 88 मिनट पर किया। आगामी फुटबाल लीग के मैच 21 मई को में खेले जाएंगे।

लखनऊ प्लेऑफ रेस से बाहर, हैदराबाद ने 6 विकेट से हराया

अभिषेक की फिफ्टी, राठी से मैदान पर बहस की

नई दिल्ली, 19 मई। आज हुये मैच में लखनऊ को हैदराबाद ने 6 विकेट से हराकर प्लेऑफ रेस से बाहर कर दिया। इकाना स्टेडियम में हैदराबाद ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। लखनऊ ने 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 205 रन बनाए। ओपनर मिचेल मार्श (65 रन) और ऐडन मार्करम (61 रन) ने फिफ्टी लगाई। निकोलस पूरन 45 रन बनाए। ईशान मलिंगा ने 2 विकेट लिए।

सनराइजर्स हैदराबाद ने 13 ओवर के बाद 3 विकेट पर 148 रन बना लिए हैं। हेनरिक क्लासन और कामिंडू मेंडिस नाबाद हैं। ईशान किशन 35 और अभिषेक 59 रन बनाकर आउट हुए। दोनों को दिग्वेश राठी ने आउट किया। 8वें ओवर में अभिषेक शर्मा और दिग्वेश राठी के बीच मैदान पर बहस हो गई। अभिषेक को आउट करने के बाद दिग्वेश ने कॉपी बुक सेलिब्रेशन किया। इस पर अभिषेक भडक गए और दोनों में बहस होने लगी। फील्ड अंपायर्स ने बीच-बचाव किया। विलियम ओरूर्क ने दूसरे ओवर में अथर्व तायडे (13 रन) को कैच कराया।

पाली जिला संघ निलंबित

जयपुर, 19 मई। एडहॉक कमेटी के कन्वीनर बिहाणी ने बताया कि जिला क्रिकेट संघ पाली द्वारा राज्य क्रीड़ा संघ (संगमो का रजिस्ट्रीकरण, मान्यता एवं विनियमन) के तहत धारा 15. धारा 17. धारा 19, धारा 20 (2), धारा 30 के तहत अपचनीय कृत्य किया है जिसके तहत राज्य संघ द्वारा धारा 22 के तहत अयोग्यता आहरित की गई है। अत: उपरोक्त वर्णित परिस्थितियों में जिला क्रिकेट संघ पाली की सम्बद्धता को राजस्थान क्रिकेट संघ से असम्बद्ध कर प्रकरण को माननीय लोकपाल राजस्थान क्रिकेट संघ को प्रेषित किया जाता है।

ऑपरेशन सिंदूर के समय पाक में थे मोईन अली के पेरेंट्स : भारत ने यहीं दागी मिसाइलें

नई दिल्ली, 19 मई। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर मोईन अली ने खुलासा किया कि इंडियन आर्मी के ऑपरेशन सिंदूर के समय उनके माता-पिता पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में थे। इंडियन आर्मी ने इन्हीं इलाकों में मौजूद आतंकी ठिकानों पर मिसाइलें दागी थीं। बीयर्ड बिफोर विकेट पॉडकास्ट पर बात करते हुए मोईन ने बताया कि हमलों के तुरंत बाद उन्होंने छोड़ने का मन बना लिया था। वे अपनी टीम के लिए सेकेंड फेज के मैच खेलने के लिए भारत भी नहीं आए। डरकरभागे मोईन के घरवाले इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर मोईन अली ने बताया कि के जिस हिस्से में मिसाइल हमले हुए, उनके माता-पिता उस जगह से 1 घंटे की दूरी पर ही थे। हमलों से डरकर उनके घरवाले अगली फ्लाइट से ही छोड़कर चले गए। मुझे खुशी हुई कि वे किसी तरह वहां से निकल गए, लेकिन ये सब देखना खतरनाक था।

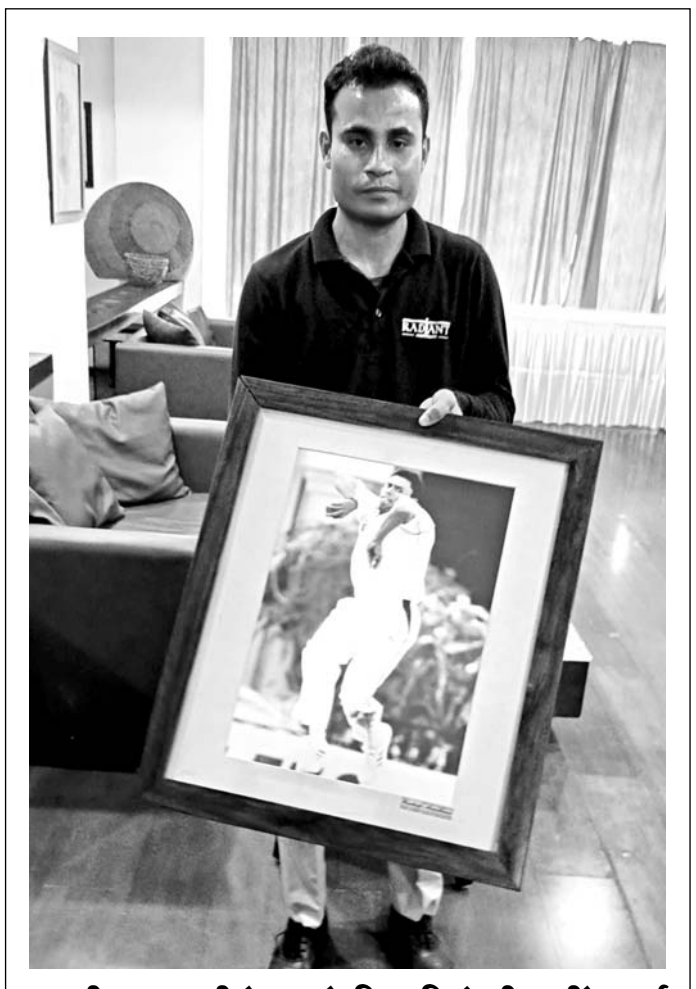

आरसीए अकादमी से पाक के खिलाड़ियों की तस्वीरें हटाई

जयपुर, 19 मई। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के बीच सीजफायर के बाद एडहॉक कमेटी के चार सदस्यों ने आरसीए अकादमी में लगी पाकिस्तान के खिलाड़ियों की लगी सभी तस्वीरों को दीवार से हटा दिया गया। प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद कमेटी के चारो सदस्यों ने एक मत होकर यह निर्णय लिया।

राजधानी

'प्रधानमंत्री की बीकानेर यात्रा के लिये सभी व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद करें'

प्रधानमंत्री की यात्रा की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्री ने की समीक्षा

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रस्तावित बीकानेर यात्रा (22 मई) के तहत मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर तैयारियों को लेकर समीक्षा बैठक ली। उन्होंने अधिकारियों को प्रधानमंत्री की प्रस्तावित यात्रा के तहत सभी आवश्यक व्यवस्थाएं चाक चौबन्द करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग अपनी तय जिम्मेदारियों के अनुसार काम करें तथा आपस में समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम का सफल आयोजन सुनिश्चित करें। शर्मा ने कहा कि तेज गर्मी के मद्देनजर आयोजन स्थल पर आमजन के लिए बैठने की व्यवस्था, पेयजल, आवागमन सहित अन्य सभी व्यवस्थाओं का उचित संचालन सुनिश्चित किया जाए, जिससे जनता को किसी भी तरह की असुविधा ना हो।

उन्होंने बीकानेर कलक्टर को एयरपोर्ट, हेलीपैड तथा सभा स्थल पर सभी व्यवस्थाओं को समयानुसार पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की प्रस्तावित यात्रा के तहत सुरक्षा व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गृह विभाग आगंतुकों के लिए सुरक्षा पास, यातायात प्रबंधन जैसी समुचित व्यवस्थाएं करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि संबंधित विभाग व्यवस्थाओं के सुचारू संचालन के लिए अपने-अपने विभाग का नोडल अधिकारी नियुक्त करें। साथ ही, शर्मा ने अधिकारियों को प्रधानमंत्री कार्यालय एवं रेलवे विभाग से आवश्यकतानुसार समन्वय बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, पर्यटन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग एवं संचार विभाग, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग को भी प्रधानमंत्री की प्रस्तावित यात्रा के सफल संचालन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने यात्री सुविधाओं के दृष्टिगत रेलवे स्टेशनों के सुदृढ़ीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। बीकानेर में प्रस्तावित कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री अमृत भारत देशनोक रेलवे स्टेशन का उद्घाटन, बीकानेर मुंबई एक्सप्रेस टेन को हरी झंड़ी तथा देशभर में विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास तथा उद्घाटन करेंगे। प्रधानमंत्री इस दौरान बीकानेर में विश्व प्रसिद्ध करणी माता मंदिर के दर्शन भी करेंगे। इस दौरान मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी तथा वी.सी. के माध्यम से संबंधित जिलों के अधिकारी जुड़े।

अधिकारी परिवेदनाओं का शीघ्र निपटारा करें : भजनलाल शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. भीमराव आम्बेडकर की अंत्योदय की अवधारणा के अनुरूप हमारे लिए जनसेवा ही सर्वोपरि है। जनता की प्रत्येक समस्या का समाधान कर उनकी जनकल्याणकारी योजनाओं तक सुलभ पहुंच सुनिश्चित करवाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार प्रशासन में जबावदेहिता एवं पारदर्शिता अपनाते हुए सुशासन के लक्ष्य पर केन्द्रित होकर काम कर रही हैं। शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नियमित जनसुनवाई कर रहे थे। जनसुनवाई में सैकड़ों की संख्या में परिवादी अपनी समस्या को लेकर आए। मुख्यमंत्री ने प्रत्येक परिवादी की समस्या को सुना तथा अधिकारियों को इनके त्वरित समाधान के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री की संवेदनशीलता एवं त्वरित निर्णयों से आमजन बेहद संतुष्ट नजर आए।

कंवरलाल मीणा मामले में कांग्रेस नेता मिले राज्यपाल से

जयपुर। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली और पीसीसी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने राज्यपाल हरिभाऊ बागडे को संविधान के अनुच्छेद 161 के अंतर्गत सजायाफ्ता अंता विधायक कंवरलाल मीणा की सजा माफी नहीं करने के लिए एक पत्र सौंपा है।

जूली ने पत्र के माध्यम से बताया कि विधायक अब तक कंवरलाल मीणा को 20 वर्ष पुराने विभिन्न आपराधिक प्रकरणों में दोषी मानते हुए एडीजे न्यायालय अकलेरा जिला झालावाड़ द्वारा 3 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई।

मीणा ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के सिर पर पिस्तौल तान दी थी। उन्होंने बताया कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारी राजस्थान प्रशासनिक सेवा के उपखंड अधिकारी एवं तहसीलदार की गवाही को मुख्य आधार बनाते हुए न्यायालय द्वारा कंवरलाल मीणा को दोषी करार देते हुए सजा सुनाई गई। उच्च न्यायालय द्वारा उन्हें समर्पण किए जाने के निर्देश दिए गए। मीणा द्वारा राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए राज्यपाल से माफी हेतु प्रयास किया जा रहे हैं।

जूली बोले अपराधी को शिथिलता दी जाती है तो इससे अपराधियों के हौसले बुलंद होंगे। उन्होंने बताया कि लिली थॉमस के प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय ने यह सुस्थापित किया है कि यदि किसी विधायक व सांसद को 2 वर्ष या उससे अधिक की सजा होती है किसी आपराधिक प्रकरण में हो जाती है तो वह तुरंत विधायक व सांसद पद से अयोग्य हो जाएगा।

इस दौरान पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा, उपनेता प्रतिपक्ष रामकेश मीणा, मुख्य सचेतक रफीक खान, विधायक डूंगाराम गैदर, हाकिम अली, हरिमोहन शर्मा, भगवान सैनी, जाकिर हुसैन उपस्थित रहे।

'डबल इंजन सरकार किसान-पशु पालकों के कल्याण के लिए कदम उठा रही है'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने अलवर दुग्ध संघ की प्रगति की प्रशंसा की

- मुख्यमंत्री ने अलवर में महाराणा प्रताप की मूर्ती का अनावरण, सिलीसढ़ पेयजल परियोजना का शिलान्यास तथा अलवर डेयरी के नये उत्पादों को लाँच किया।
- अलवर के कार्यक्रमों में केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव, राजस्थान के मंत्री जोराराम कुमावत, झाबर सिंह खर्रा, संजय शर्मा, जवाहर सिंह बेढम, भाजपा के स्थानीय नेता, प्रशासनिक अधिकारी आदि ने भाग लिया।

अलवर, 19 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को अलवर में श्वेत क्रांति द्वितीय चरण एवं अलवर दुग्ध संघ दिवस कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने सिलिसेढ़ क्षेत्र से नलकूप व पाइपलाइन के माध्यम से अलवर शहर की पेयजल योजना संवर्द्धन कार्य (लगभग 23.27 करोड़) का शिलान्यास किया और अलवर डेयरी के नवीन उत्पाद मावा तथा 15 किलो के पैक में टोन्ड मिल्क से बना दही लॉन्च किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अलवर के गांवों ने 50 से अधिक साल पहले अलवर दुग्ध संघ के रूप में जो पौधा लगाया था, आज वह एक वटवृक्ष बन गया है। जब इस दुग्ध संघ की स्थापना हुई थी, तब यह 500 लीटर दूध का संकलन करता था, जो वर्तमान में रोजाना औसतन डेढ़ लाख लीटर हो गया है। साथ ही, यह संघ करीब 50 हजार लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध करवा रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अलवर में श्वेत क्रांति के द्वितीय चरण एवं अलवर दुग्ध संघ दिवस कार्यक्रम को संबोधित किया और अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, राजस्थान को-ऑपरेटिव फैडरेशन लिमिटेड, नेशनल डेयरी डैवलपमेंट बोर्ड एवं राजीविका द्वारा लगाई गई स्टॉल्स का अवलोकन किया।

उन्होंने ने कहा केन्द्र और राज्य की डबल इंजन सरकार किसान-पशुपालकों के कल्याण और डेयरी क्षेत्र के उत्थान के लिए निर्णायक कदम उठा रही है।

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, राजस्थान को-ऑपरेटिव फेडरेशन लिमिटेड, नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड एवं राजीविका की ओर से लगाई गई स्टॉल्स का अवलोकन किया तथा "बहरोड बनेगा बेहतर" पुस्तिका का विमोचन भी किया।

मुख्यमंत्री शर्मा ने मोती डूंगरी स्थित पार्क में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण किया। लगभग 50 लाख रूपये की लागत से बनी यह प्रतिमा पंचधातु से निर्मित है। इस प्रतिमा की उंचाई साढ़े 12 फीट और वजन 2 हजार 200 किलोग्राम है। शर्मा ने यहां मौलश्री पौधे का रोपण भी किया। इस दौरान, सर्व समाज द्वारा मुख्यमंत्री शर्मा का साफा पहनाकर एवं राजपूत समाज द्वारा तलवार भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने भी उपस्थित लोगों को संबोधित किया। कार्यक्रम में पशुपालन एवं डेयरी, गोपालन, देवस्थान विभाग मंत्री जोराराम कुमावत, नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विभाग मंत्री झाबर सिंह खर्रा, पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री संजय शर्मा, गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, कई पूर्व मंत्री, विधायक, पूर्व विधायक, जिला प्रमुख, जिला अध्यक्ष के अलावा, संभागीय आयुक्त पूनम, पुलिस महानिरीक्षक जयपुर रेंज अजय पाल लांबा, जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला, पुलिस अधीक्षक संजीव नैन आदि अधिकारी व जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

आगामी अगस्त ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

केवल 2.5 प्रतिशत रह गया था। ऐसे में 50 प्रतिशत अप्रूवल रेटिंग को पार करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी को उन लोगों का भी समर्थन प्राप्त करना होगा, जिन्होंने 2024 में उनके खिलाफ मतदान किया था।

यह रिपोर्ट, चार अन्य वेरिएबल्स (परिवर्तनीय तत्वों), जैसे सामाजिक समूह, आयु, वर्ग, लिंग और क्षेत्र पर भी आधारित होगी।

इंडिया पोलिटिकल परसैप्शन इंडेक्स के एल्गॉरिद्म 25 वर्षों के उस शोध पर आधारित हैं, जिनमें यह समझा गया कि किस प्रकार राजनीतिक निष्ठा व्यक्ति या दल के प्रदर्शन से भी अधिक प्रभावशाली कारक बन जाती है।

पोल फर्स्ट एक ऐसे ट्रैकर का वादा करता है, जो भारतीय राजनीति को उत्तरदायी बनाएगा, जैसे अमेरिका में 1937 से गैलप, ब्राज़ील में 1983 से डेटाफोल्हा, यूनाइटेड किंगडम में 1997 से पोलिटिकल मॉनिटर, जर्मनी में 1996 से ए.आर.डी. और फ्रांस में दिसंबर 1938 से आई.एफ.ओ.पी. कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार ने उन्हें पार्टी नेतृत्व से बिना पूछे सीधे आमंत्रित कर दिया था।

ममता बनर्जी ने तृणमूल के सदस्यों को प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने से रोक दिया और खुद को पूरे सर्वदलीय प्रयास से अलग कर लिया। यह उल्लेखनीय है कि कांग्रेस ने भी तब आपत्ति जताई थी जब भाजपा ने कांग्रेस सांसदों को सीधे आमंत्रित किया था, लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का बहिष्कार नहीं किया।

संभावना है कि ममता इस बात से नाराज़ थीं कि सरकार ने उनकी पार्टी के लोगों को सीधे ही आमंत्रित कर लिया, उन्हें पूछा तक नहीं। ममता बनर्जी का अपनी पार्टी पर सख्त नियंत्रण है और उनकी मर्ज़ी के बिना पार्टी में पत्ता तक नहीं हिलता।

हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि इस पूरे मामले से खुद को अलग करने के पीछे राजनीतिक कारण हैं। वे मानते हैं कि ममता ने अपने मुस्लिम वोट बैंक के सामन आक्रामक रुख नहीं अपनाया, और इसी वजह से वे "ऑपरेशन सिंदूर" से खुद को अलग रखने की कोशि कर रही है।

यह कदम उनके मुस्लिम तुष्टीकरण करने के अन्य प्रयासों जैसा ही है। यह इसलिए और भी जरुरी हो गया है, क्योंकि कई अखिल भारतीय मुस्लिम पार्टियां 2026 के विधानसभा चुनावों में पश्चिम बंगाल में अपने उम्मीदवार उतारने की योजना बना रही हैं। ममता ने पहले से कुछ रणनीतिक कदम उठाए हैं, ताकि अगले साल के राज्य चुनावों की तैयारी की जा सके।

ममता बनर्जी का कहना है कि यह अधिकार पार्टी का होता है कि वह तय करे कि किसे प्रतिनिधिमंडलों में भेजा जाए। सरकार या कोई अन्य संस्था यह निर्णय नहीं ले सकती। सरकार द्वारा सीधे सदस्यों को आमंत्रित करना पार्टी के अधिकारों का उल्लंघन है।

हालांकि यह तर्क कुछ हद तक अतिरंजित लगता है, क्योंकि अन्य सभी दलों ने बिना किसी विवाद के सरकार के आमंत्रण को स्वीकार किया है। आखिरकार, यह मामला राष्ट्रीय महत्व का है और इसमें सभी सांसदों से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

गैर सरकारी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

को कुछ अभिभावकों ने डिवीज़नल कमेटी के समक्ष चुनौती दी। वहीं, डिवीज़नल कमेटी ने स्कूल फीस कमेटी के आदेश को गलत माना। याचिका में कहा गया कि फीस नियंत्रण अधिनियम की धारा दस में डिवीज़न कमेटी के आदेश को चुनौती देने के लिए रिवीज़न कमेटी के गठन का प्रावधान है, लेकिन राज्य सरकार ने बीते नौ साल से इस रिवीज़न कमेटी का गठन ही नहीं किया है, जबकि मई, 2024 में सुनवाई के दौरान, राज्य सरकार ने अदालत में अंडरटेकिंग दी थी कि तीन सप्ताह में रिवीज़न कमेटी का गठन कर लिया जाएगा। याचिका पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने दिनों शिक्षा सचिव से कमेटी गठन को लेकर शपथ पत्र पेश करने को कहा था।

कॉलेज शिक्षकों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मेडिकल शिक्षकों की रिटायरमैंट आयु पूर्व में ही साठ साल से बढ़ाकर 65 साल की जा चुकी है। इसके अलावा, यूपी, एमपी और गुजरात सहित देश के करीब डेढ दर्जन राज्यों में कॉलेज शिक्षकों की रिटायरमैंट उम्र 65 साल है। इसके बावजूद, प्रदेश में कॉलेज शिक्षकों की रिटायरमैंट उम्र साठ साल ही है।

याचिका में कहा गया कि मैडिकल शिक्षक और कॉलेज शिक्षकों का काम एक समान है। ऐसे में राज्य सरकार उसकी सेवानिवृत्ति आयु अलग-अलग रखकर भेदभाव नहीं कर सकती। इसलिए कॉलेज शिक्षकों की रिटायरमैंट उम्र भी 65 साल की जाए।

राहुल गाँधी ने जयराम रमेश को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और मनीष तिवारी को प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया, जबकि ये नाम कांग्रेस की तरफ से नहीं भेजे गए थे।

कांग्रेस के एक धड़े का मानना है कि पार्टी को इस नाम लेने के खेल में नहीं पड़ना चाहिए था।, बल्कि यह जिम्मा सरकार पर छोड़ देना चाहिए था कि वह कांग्रेस सांसदों में से प्रतिनिधियों का चयन करे।

जयराम रमेश लगातार यह कह रहे हैं कि संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने कांग्रेस से नाम मांगे थे। लेकिन रोचक बात यह है कि खुद रिजिजू ने इससे इनकार किया है कि उन्होंने ऐसा कोई अनुरोध किया था। पार्टी महासचिव के.सी. वेणुगोपाल के नेतृत्व में थरुर को निशाना बनाने की कोशिशें चल रही हैं, जिसका संबंध केरल की कांग्रेस राजनीति से जोड़ा जा रहा है। जयराम रमेश, जो खुद का पद बचाने की कोशिश कर रहे हैं, इसमें सहायता कर रहे हैं।

राहुल गांधी ने दृढ़ शब्दों में स्पष्ट कर दिया है कि यह वक्त इस तरह की आंतरिक राजनीति का नहीं है। शशि थरुर और मनीष तिवारी दोनों ने यह साफ किया है कि यदि सरकार उन्हें आमंत्रित करती है, तो वे राष्ट्रीय हित में प्रतिनिधिमंडल में शामिल होंगे।

रोचक बात यह है कि गुलाम नबी आज़ाद, जो अब कांग्रेस में नहीं हैं, लेकिन जम्मू-कश्मीर का एक विश्वसनीय चेहरा माने जाते हैं, उन्हें भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि जब कुछ समय पहले उन्हें दोबारा कांग्रेस में लाने की कोशिश हो रही थी, तो यही जयराम रमेश थे, जिन्होंने उस प्रयास को विफल कर दिया था। राहुल गांधी को अब अपनी कल्पनाओं से बाहर निकल कर पार्टी के नेताओं की चैकलिस्ट बनानी होगी और यह समझना होगा कि कौन किस किस्म की राजनीति कर रहा है।

रिलायंस ने एशिया का वर्ष 2025 का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जुटाने में सक्षम है।

यह पूंजी निवेश भविष्य की दिशा में उठाया गया कदम है। यह मुकेश अंबानी की उस दृष्टि के अनुरुप है, जिसमें रिलायंस को ग्रीन हाइड्रोजन, सोलर मॉड्यूल, एआई आधारित प्लेटफॉर्म और उन्नत निर्माण के क्षेत्र में विश्व में लीडर बनाना शामिल है। ये परियोजनाएं शुरुआत में बड़े निवेश की मांग करती हैं, लेकिन ये भविष्य में भारी रिटर्न और वैश्विक नेतृत्व की संभावना रखती हैं।

इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह सिंडिकेटेड ऋण कोई तात्कालिक जरुरत या केवल रीफाइनैंसिंग मात्र नहीं है, बल्कि यह रिलांयस की दीर्घकालिक परिवर्तन यात्रा के लिए एक रणनीतिक ईंधन है। यह दिखाता है कि कंपनी भारतीय सीमाओं से आगे जाकर अन्य उभरते क्षेत्रों में लीडर बनने का इरादा रखती है।

इस डील का समय भी विशेष महत्व रखता है। एशिया-प्रशांत (जापान को छोड़कर) क्षेत्र में 2025 में जी3 मुद्राओं (यूएसडी, इयूआर, जेपीवाई) में सिंडिकेटेड ऋण मात्रा केवल 29 बिलियन डॉलर रही है, जो 20 वर्षों में सबसे कम है। यह गिरावट सख्त मौद्रिक नीतियों, भू-राजनीतिक तनाव और निवेशकों की सतर्कता के कारण आई है। कई एशियाई कंपनियों ने महंगे ऋण और जोखिम से बचने के लिए विदेशी उधारी को टाल दिया है या उसकी मात्रा घटाई है। फिर भी, भारतीय कंपनियां इस क्षेत्र में अपवाद साबित हुई हैं।

मई 2025 के मध्य तक, भारतीय कॉर्पोरेट्स ने 10.4 बिलियन डॉलर की विदेशी उधारी जुटाई है, जो क्षेत्र के कुल ऋण का एक-तिहाई से अधिक है। यह भारत की मजबूत आर्थिक नींव, स्थिर रुपया और देश के विकास पथ में वैश्विक निवेशकों के भरोसे को दर्शाता है।

इस कुल ऋण का लगभग 28 प्रतिशत हिस्सा अकेले रिलायंस के पास है। इसकी मात्रा, संरचना और व्यापक बैंक भागीदारी न केवल रिलायंस की विश्वसनीयता को दर्शाती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि सतर्क वित्तीय माहौल में भी वैश्विक ऋणदाता हाई रेटिंग वाली भारतीय कंपनियों में रुचि रखते हैं।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908